आत्मधर्म

स्व० पूज्य गुरुदेवश्री कानजी स्वामी

[श्रद्धांजलि अंक – उत्तरार्द्ध]

वर्ष ३६ : अंक ८ [४२८] फरवरी, १९८१

कहाँ/क्या

श्रद्धांजलियाँ

१. श्री हजारीलालजी 'काका', सकरार
२. श्री रामजी माणेकचंद दोशी, सोनगढ़
३. पंडित केशरीमलजी 'धवल', कोथली
४. संपादकीय - अब क्या होगा ?
५. (पूज्य बेनश्री) चंपाबेन, सोनगढ़
६. (पूज्य बेन) शांताबेन मणीलाल खारा, सोनगढ़
७. पंडित धन्नालालजी, ग्वालियर
८. पंडित जगन्मोहनलालजी सिद्धांतशास्त्री, कटनी
९. डॉ० राजारामजी जैन, आरा
१०. स०सि० धन्यकुमारजी जैन, कटनी
११. डॉ० राजेन्द्रजी बंसल, शहडोल
१२. डॉ० कन्छेदीलालजी जैन, शहडोल
१३. पंडित ज्ञानचंदजी 'स्वतंत्र', गंजबासौदा
१४. पंडित उत्तमचंदजी जैन, सिवनी
१५. सेठ भगवानदासजी जैन, सागर
१६. ब्रह्मचारी हेमचंदजी जैन, भोपाल
१७. श्री भगतरामजी जैन, नई दिल्ली
१८. श्री सरवनलालजी जैन, सरधना
१९. डॉ० ताराचंदजी जैन बक्षी, जयपुर
२०. श्री अक्षयकुमारजी जैन, नई दिल्ली
२१. वैद्य गंभीरचंदजी जैन, अलीगंज
२२. श्री हीराचंदजी बोहरा, बजबज

कहाँ/क्या

श्रद्धांजलियाँ

२३. श्री कपूरचंदजी बरैया, लश्कर-ग्वालियर
२४. डॉ० कपूरचंद्रजी जैन, सागर
२५. श्रीमती नर्मदाबाई जैन, डोंगरगढ़
२६. श्री दिनेश जे० मोदी, बम्बई
२७. पंडित धर्मदासजी जैन, बड़ौत
२८. श्री दशरथजी जैन, छतरपुर
२९. डॉ० कुलभूषणजी लोखंडे, सोलापुर
३०. पंडित भंवरलालजी पोल्याका, मारोठ
३१. श्री मोहनलालजी पाटनी, कलकत्ता
३२. श्री राजमलजी जैन, जयपुर
३३. श्री लक्ष्मीचंद्रजी 'सरोज', जावरा
३४. श्री मिश्रीलालजी गंगवाल, इंदौर
३५. श्री हुकमचंदजी जैनी, सरधना
३६. डॉ० देवेन्द्रकुमारजी शास्त्री, नीमच
३७. पंडित चुन्नीलालजी शास्त्री, शहडोल
३८. डॉ० कस्तूरचंदजी कासलीवाल, जयपुर
३९. ब्र० विमलाजी जैन, बांदा
४०. श्री कन्हैयालालजी (कन्नूभाई), दाहोद
४१. समाचार दर्शन
४२. श्रद्धांजलियाँ

संपादक : **डॉ० हुकमचन्द भारिल्ल** प्रबंध संपादक : **अखिल बंसल**, एम०ए०
प्रकाशक : **श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट** सोनगढ़ (भावनगर-गुजरात)
कार्यालय : **श्री टोडरमल स्मारक भवन**, ए-४, बापूनगर, जयपुर ३०२००४
मुद्रक : सोहनलाल जैन, जयपुर प्रिण्टर्स, जयपुर

आत्मधर्म

वर्ष : 36 [४२८] अंक : ८

श्री कानजी स्वामी के प्रति -

सच्ची श्रद्धांजलि

श्री कानजी स्वामी ने आध्यात्म की ज्योति जलाई।
अंधकार में भटक रहे भक्तों को राह दिखाई॥

अब तक क्रियाकांडों को ही सही धर्म जाना था,
केवल व्रत-उपवास आदि को मोक्षमार्ग माना था।
छुआछूत का भूत सदा सिर पर मंडराया करता,
केवल पुण्य-क्रियाओं पर नर नित्य नये पग धरता॥
धर्म, पुण्य में नहीं, बात स्वामीजी ने बतलाई।
श्री कानजी स्वामी ने आध्यात्म की ज्योति जलाई॥

निश्चयनय के साथ सदा व्योहार धर्म को पाला,
इसीलिये तो जगह-जगह मंदिर बनवाये आला।
प्रभु की भक्ति-भजन में जो घंटो निमग्न रहते थे,
पुण्य हेय बतला करके भी पुण्य-कार्य करते थे॥
जैनधर्म की जान गये थे जो पूरी गहराई।
श्री कानजी स्वामी ने आध्यात्म की ज्योति जलाई॥

सच्ची श्रद्धांजलि आज उनकी इस भाँति मनायें,
क्रियाकांड के साथ-साथ ही आत्मध्यान पर आयें।
वाद-विवादों में पड़ पर के अवगुण नहीं निहारें,
सच्चे जैन वही हैं जो निज आत्मस्वरूप विचारें॥
'काका' अंत-अंत तक उनने यही बात समझाई।
श्री कानजी स्वामी ने आध्यात्म की ज्योति जलाई॥

—हजारीलाल 'काका' बुंदेलखंडी, सकरार (झांसी-उ०प्र०)

आप सदा हमारे समीप ही हैं

मोक्षमार्ग के पथिक, हे कृपालु गुरुदेव!

आपका वियोग मुझे और समस्त मुमुक्षु समाज को अत्यंत असह्य लगता है। आपका मुझ पर अनन्य उपकार है। आपका पवित्र समागम और आपकी सनातन सत्य वीतरागमार्ग बोधक अध्यात्मवाणी का अमूल्य लाभ लगभग अर्द्धशताब्दी से मुझे मिलता रहा है। सोनगढ़ में आपने स्थानकवासी सम्प्रदाय छोड़कर मंगल परिवर्तन किया; उसके पश्चात् आपके प्रभावना-उदय की पवित्र छाया में 'श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट' की स्थापना तथा संचालन करके सेवा का अवसर आपकी सत्कृपा से मुझे मिला है और वह जीवनपर्यंत निभाने की शक्ति आपके पुण्य-प्रताप से मुझे मिले-ऐसी भावना है।

'आत्मधर्म' का संपादन, समयसार आदि सत्शास्त्रों का प्रकाशन तथा आपके प्रवचन-साहित्य का प्रकाशन आदि वीतराग-जिनशासन की प्रभावना के विविध कार्यों और आपके मंगलकारी प्रभावना-उदय में योगदान देने का अमूल्य लाभ आपके प्रसाद से वर्षों पर्यंत मुझे मिला था—इसप्रकार मेरे जीवन का उत्तरभाग आपके शुद्धात्मसाधनारत पवित्र जीवन के साथ ओतप्रोत हो गया था। अध्यात्मतत्त्व की यथार्थ रुचि का बीज रोपनेवाले मेरे परमोपकारी गुरुतत्त्व का वियोग वास्तव में मेरे लिए एक अत्यंत दुखद घटना है।

हे कृपालु गुरुदेव! वीतरागमार्ग की विशुद्ध साधना सहित आपने स्वर्ग प्रयाण किया, क्षेत्र से हमें आपका विरह हुआ; परंतु हममें बोये बोधबीज के माध्यम से तो आप सदा हमारे समीप ही हैं। वीतरागमार्ग बतानेवाली आपकी भव्यमुद्रा तथा आपका अभूतपूर्व अद्‌भुत शुद्धात्मतत्त्वद्योतक व्यक्तित्व हमारे हृदय में सदा के लिए टंकोत्कीर्ण ही हो गया है।

आपके उपकार से अत्यंत उपकृत होता हुआ, विनम्र भावनापूर्वक, आपके विरह से व्यथित हृदय के दुखद आघात को सहन करने के लिए, आपके अनंत उपकारों के मंगल-स्मरणपूर्वक, आपश्री को अत्यंत भक्तिभावपूर्ण श्रद्धांजलि समर्पित करता हूँ। **— रामजी माणेकचंद दोशी**

अध्यक्ष, श्री दिगम्बर जैन स्वाध्यायमंदिर ट्रस्ट, सोनगढ़ (गुज०)

समयसार के अपूर्व संगीत

श्रद्धेय पूज्य गुरुदेव श्री कानजीस्वामी के देहांत से भारत के संपूर्ण रोम-रोम में विरह का दर्द है। आप जैन जगत में समयसार के अपूर्व संगीत थे। अनेकांतमात्र वस्तु के अनुभवी ने स्यादवादरूपी वाणी से निडर होकर जो तत्त्व का निरूपण किया, उसकी ध्वनि आज भी भारतवर्ष के कण-कण में गूँज रही है।

हे गुरुदेव! आपने जो मार्ग बताया है, उसकी मैं जीवन भर सुरक्षा करता रहूँगा—ऐसी दृढ़ प्रतिज्ञापूर्वक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ। **— पंडित केशरीचंद 'धवल', कोथली (महा०)**

गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबली के महामस्तकाभिषेक के अवसर पर

श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैनतीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट द्वारा

सत्साहित्य-विक्रय एवं प्रदर्शनी का भव्य आयोजन

श्री गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबली के सहस्राभिषेक महोत्सव की तैयारियाँ व्यापक स्तर पर चल रही हैं। समाज के वरिष्ठ नेता एवं शासकीय अधिकारी उक्त आयोजन को सफल बनाने हेतु दिन-रात परिश्रम कर रहे हैं। भगवान महावीर स्वामी के निर्वाण-वर्ष के उपरांत यह प्रथम अवसर है कि जब इतने विशाल पैमाने पर कार्यक्रम हो रहा है।

इस महोत्सव के प्रसंग पर श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैनतीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट की ओर से १८'×५४' क्षेत्र में सत्साहित्य विक्रय-केंद्र एवं प्रदर्शनी का आयोजन किया जा रहा है। जिसका विधिवत् उद्घाटन पूज्य एलाचार्य मुनिश्री विद्यानंदजी एवं स्वस्ति श्री भट्टारक चारुकीर्तिजी १९ फरवरी, १९८१ को करेंगे।

उक्त प्रदर्शनी में पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी द्वारा हुए तत्त्वप्रचार एवं अन्य गतिविधियों का प्रदर्शन विभिन्न चार्टों एवं छाया-चित्रों द्वारा किया जावेगा।

इस कार्यक्रम में भाग लेने के लिए समाज के अनेक गणमान्य व्यक्तियों के अलावा श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैनतीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट के अध्यक्ष पंडित बाबूभाई चुन्नीलाल मेहता एवं ट्रस्टी श्री नेमीचंदजी पाटनी व सेठ श्री रतनलालजी गंगवाल, आत्मधर्म के संपादक डॉ० हुकमचंदजी भारिल्ल, जैनपथ प्रदर्शक के संपादक पंडित रतनचंदजी भारिल्ल, पंडित ज्ञानचंदजी विदिशा, पंडित भरतचक्रवर्ती मद्रास, डॉ० प्रियंकर यशवंत जैन नासिक आदि श्रीमान्, विद्वान् एवं कार्यकर्तागण श्रवणबेलगोला पहुँच रहे हैं। साहित्य प्रकाशन एवं प्रदर्शनी की तैयारी जोरों पर चल रही है।

श्रवणबेलगोला की उक्त समुचित व्यवस्था में सर्वश्री भबूतमलजी भंडारी, प्रवीणभाई एवं मनहरभाई तत्परता से जुटे हुए हैं। हिन्दी, गुजराती, मराठी, कन्नड़, तमिल तथा अंग्रेजी भाषाओं में लगभग ३.५ लाख रुपये की लागत से ५७ पुस्तकें एवं ग्रंथ प्रकाशित किये जा रहे हैं, कि जो लागत से भी कम मूल्य में उपलब्ध होंगे।

श्री अखिल बंसल के निर्देशन में जयपुर के प्रसिद्ध चित्रकार श्री अनंत कुशवाहा प्रदर्शनी की तैयारी में जी-जान से लगे हुए हैं।

आत्मधर्म के इसी अंक का कोड़पत्र

श्री गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबली सहस्राब्दि समारोह के अवसर पर

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी की स्मृति में

श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट द्वारा

मूल्यों में निम्नानुसार कमी की जा रही है :—

	आत्मधर्म (मासिक)			जैनपथ प्रदर्शक (पाक्षिक)		
	वर्तमान मूल्य	छूट	घटा हुआ मूल्य	वर्तमान मूल्य	छूट	घटा हुआ मूल्य
आजीवन शुल्क	१०१)	२५)	७६)	१०१)	२५)	७६)
त्रैवार्षिक शुल्क	२७)	७)	२०)	२४)	८)	१६)
वार्षिक शुल्क	९)	२)	७)	८)	२)	६)

साहित्य विक्रय

				छूट
२५)	से	५०)	तक का खरीदने पर	१०%
५१)	से	१००)	'' ''	१५%
१०१)	से	५००)	'' ''	२०%
५०१)	से	१०००	'' ''	२५%
१०००)			से अधिक का ''	३०%

संपादकीय

अब क्या होगा ?

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के देहावसान के बाद 'अब क्या होगा ?' यह प्रश्न आज सभी की जबान पर है। यह ज्वलंत प्रश्न उनके हृदयों को तो आंदोलित किये ही है, जो उनमें अगाध श्रद्धा रखते थे, उनके अनुगामी थे, पर मध्यस्थ एवं प्रतिकूलजन भी टकटकी लगाकर देख रहे हैं कि देखें अब क्या होता है ? कोई कहे चाहे न कहे पर.....।

हमारे कार्यालय में सैकड़ों पत्र इसप्रकार के आये हैं, जिनमें इसप्रकार की जिज्ञासा प्रगट की गई है। कुछ लोगों ने तो अनेक प्रकार के सुझाव भी दिये हैं, आशंकायें प्रगट की हैं, उपदेश भी दिये हैं, आदेश भी दिए हैं। चर्चाओं में, पत्रिकाओं में, श्रद्धांजलियों में, संस्मरणों में भी इसप्रकार के भाव प्रगट किये गये हैं।

सब कुछ मिलाकर यही प्रतीत होता है कि समाज के सामने स्वामीजी के अभाव से हुई रिक्तता मुँह बाए खड़ी है, जिसकी पूर्ति असंभव दिखाई दे रही है और यह प्रश्न समाज को मथे डाल रहा है कि 'अब क्या होगा ?'

बात दूसरों की ही नहीं, हम सबकी भी तो यही स्थिति है। पर बात यह है कि जो हो गया, सो तो हो ही गया, अब उसे बदलना तो संभव है नहीं। गुरुदेवश्री के स्थान की पूर्ति की कल्पना भी काल्पनिक ही है, क्योंकि उनके स्थान की पूर्ति भी मात्र वे ही कर सकते थे। गुरुदेव तो गए, न तो उन्हें वापिस ही लाया जा सकता है और न नए गुरुदेव ही बनाए जा सकते हैं। गुरुदेव बनते हैं, बनाए नहीं जाते। जो बनाने से बनते हैं, या बनाये जाते हैं, वे गुरु नहीं, महंत होते हैं, मठाधीश होते हैं। उनसे गुरुगम नहीं मिलता, गुरुडम चलता है।

जिन गुरुदेवश्री ने जीवनभर गुरुडम का विरोध किया, उनके नाम पर गुरुडम चलाना न तो उपयुक्त ही है और न उन्हें भी इष्ट था, होता तो अपने उत्तराधिकारी की घोषणा वे स्वयं कर जाते। उनके जीवनकाल में भी जब उनसे इसप्रकार की चर्चायें की गईं तो उन्होंने उदासीनता ही दिखाई।

अत: उनके रिक्तस्थान की पूर्ति की चर्चा का कोई अर्थ नहीं है। रहा प्रश्न उनके द्वारा या

उनकी प्रेरणा से संचालित तत्त्वप्रचार की गतिविधियों के भविष्य का। सो भाई, पिता के देहावसान होने पर उनके लगाये कारखाने बंद नहीं होते, अपितु एक के अनेक होकर और अधिक द्रुतगति से चलते हैं। जब दो-चार पुत्रों के होने मात्र से ये कल-कारखाने द्विगुणित-चतुर्गुणित होकर चलते हैं, तो जिस धर्मपिता ने चार लाख से अधिक धर्म संतानें छोड़ी हों, उनके चलाये कार्यक्रम कैसे बंद हो सकते हैं? वे तो शतगुणित-सहस्त्रगुणित होकर चलने चाहिये और चलेंगे भी। इसमें आशंकाओं के लिये कोई अवकाश नहीं है।

सोनगढ़ में ही नहीं, अपितु सारे देश में अब भी वैसे ही शिविर लगेंगे जैसे कि गुरुदेवश्री की उपस्थिति में लगते थे। वैसा ही साहित्य प्रकाशित होगा और कम से कम मूल्य में उपलब्ध कराया जायेगा, जैसा कि गुरुदेवश्री के सद्भाव में होता था। और भी सभी कार्यक्रम अब भी उसीप्रकार संचालित होंगे जिसप्रकार कि तब चलते थे।

याद रखो यदि ऐसा नहीं हुआ तो हम सब उन्हीं कुपुत्रों में गिने जावेंगे जो कि पिता के द्वारा छोड़ी संपत्ति को बढ़ाते नहीं, अपितु बर्बाद कर देते हैं। अब हमें गुरुदेव की ओर नहीं, अपनी ओर देखना है और यह सिद्ध करना है कि हम अपने धर्मपिता के कपूत नहीं, अपितु सपूत हैं। क्या कमी है आज हमारे पास? धनबल, जनबल, बुद्धिबल—सभी कुछ तो है। कुछ भी तो नहीं ले गये वे, सबकुछ यहीं तो छोड़ गए हैं, हमारे लिये। जब उन्होंने दिगम्बर धर्म स्वीकार किया था, तो आत्मबल के अतिरिक्त क्या था उनके पास? पर अकेले उन्होंने एक टेकरी को तीर्थ बना दिया, देशभर में धर्म का डंका बजा दिया। क्या हम सब मिलकर भी उनकी थाती को न संभाल सकेंगे? हम सबके समक्ष यह एक चुनौती है। इस चुनौती को आज हमें स्वीकार करना है।

हम उन गुरु के शिष्य हैं जिन्होंने कभी पर की ओर नहीं देखा, मुड़कर पीछे नहीं देखा, जिन्होंने मात्र स्वयं को देखा और स्वयं के बल पर ही चल पड़े। वे जहाँ खड़े हो गये, वह स्थान तीर्थ बन गया; वे जिधर चल पड़े, उधर लाखों लोग चल पड़े। वे भागीरथ थे, जो अपनी भागीरथ पुरुषार्थ द्वारा अध्यात्म-भागीरथी को हम तक लाये और जिन्होंने सारे जगत को उसमें डुबकी लगाने के लिए पुकारा। हम भी कुछ कम नहीं, उस भागीरथी को निर्मल जलधारा को हम जन-जन तक पहुँचायेंगे। वे अकेले थे, पर तूफान थे; हम चार लाख से भी अधिक हैं, पर वह तूफानी वेग हममें कहाँ? न सही तूफानी वेग से, पर चलेंगे हम भी.....।

'अब क्या होगा ?' पूछनेवालों को हम विश्वास दिलाना चाहते हैं कि वही होगा जो गुरुदेवश्री ने बताया है, चलाया है, जो अभी चलता है, अभी तक चलता रहा है, वह अब भी चलता रहेगा। उसीप्रकार चलता रहेगा, उसमें कोई कमी नहीं आयेगी, हो सकता है कि उसकी चाल में और भी तेजी आ जावे। पर भाई..... गुरुदेव तो गये सो गये, उन्हें तो कहाँ से लायें ?

पर एक बात यह भी तो है कि हम जिस युग में पैदा हुए हैं, वह युग लाख बुरा हो, पर इसमें वे सुविधायें हैं, जो महावीर के, कुन्दकुन्द के, अमृतचंद्र के जमाने में नहीं थीं। आज गुरुदेव के हजारों घंटों के टेप हमारे पास हैं, जिन्हें हम कभी भी उन्हीं की आवाज में सुन सकते हैं, घंटों के बी.डी.ओ टेप (बोलती फिल्म) हैं, जिनके माध्यम से हम गुरुदेवश्री को चलते-फिरते देख सकते हैं, बोलते हुए देख सकते हैं, सुन सकते हैं, बस वे सदेह-सचेतन हमारे पास नहीं हैं, पर महावीर की, कुन्दकुन्द की, अमृतचंद्र की तो आवाज भी हमारे पास नहीं, चित्र भी हमारे पास नहीं, चलती-फिरती, बोलती फिल्म की बात तो बहुत दूर की कल्पना है।

इस अर्थ में हम बड़े भाग्यशाली हैं। अब तक तो हमें उनका साक्षात् लाभ मिलता था, पर अब हमें एकलव्य बनना होगा। उनके अचेतन चित्रों से, साहित्य से, टेप से, चेतन शिष्यों से देशना प्राप्त करनी होगी।

'अब क्या होगा ?' होगा क्या ? दुनिया तो अपनी गति से चलती ही रहती है, वह तो कभी रुकती नहीं। बड़े-बड़े लोग आये और चले गये, पर यह दुनिया तो निरंतर चल ही रही है, इसकी गति में कहाँ रूकावट है ? जगत की बात ही क्यों सोचते हो ? यह सोचो न कि हम सबको भी तो एक दिन इसीप्रकार चले जाना है।

'अब ञ्चया होगा ?' इस किंकर्त्तव्यविमूढ़ता की स्थिति को तोड़ो न ! छोड़ो न इस व्यर्थ के विकल्प को, और चल पड़ो उस रास्ते पर जो गुरुदेवश्री ने बताया है, और जगत को बताओ वह रास्ता जो गुरुदेवश्री ने आपको—हम सबको बताया है।

भगवान महावीर के चले जाने पर गौतम गणधर रोने नहीं बैठे थे, अपितु महावीर की बतायी राह पर चलकर स्वयं महावीर (सर्वज्ञ) बन गये थे। यदि हम गुरुदेवश्री के सच्चे शिष्य हैं तो हमें भी गुरुदेवश्री के चले जाने पर वही राह अपनानी चाहिए जो महावीर के अन्यतम शिष्य गौतम ने अपनाई थी।

गुरुदेवश्री के अभाव में उदासी तो सहज है, पर निराशा का कोई स्थान नहीं होना

चाहिए। उठो! मन को यों निराश न करो और चल पड़ो उस राह पर..... । बातों से नहीं, आओ! हम सब मिलकर अपने कार्यों से दुनिया को इस प्रश्न का उत्तर दें, दुनिया की इस शंका का समाधान प्रस्तुत करें कि 'अब क्या होगा ?'

इस अंक के संबंध में

यह अंक श्रद्धांजलि अंक का उत्तरार्द्ध है। पूर्वार्द्ध के रूप में गतांक आपकी सेवा में पहुँच ही चुका है। सीमित स्थान होने के कारण समागत सभी श्रद्धांजलि-संस्मरण लेखों को संपूर्णत: देना संभव नहीं था, कुछ को पूरा देकर कुछ को स्थान ही न देना उचित प्रतीत नहीं हो रहा था, अत: प्राप्त सामग्री को संक्षिप्त रूप से देकर अधिक से अधिक सामग्री को समेटने के प्रयास में अधिकांश श्रद्धांजलि-संस्मरण अपने मूल आकार में नहीं आ पाये हैं। इसीप्रकार की स्थिति समाचारों में भी रही है। बहुत कुछ सामग्री ऐसी भी है जिसे स्थान ही प्राप्त नहीं हो सका है। उसमें से कुछ का अति संक्षिप्त रूप से अगले अंक में व कुछ का स्वामीजी के ९२वें जन्म-दिवस के उपलक्ष में प्रकाशित होनेवाले मई अंक में उपयोग करने का यत्न करेंगे। तदर्थ संबंधित महानुभावों से क्षमाप्रार्थी हैं।

श्री कुन्दकुन्द कहान दि० जैनतीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट की मीटिंग में पारित शोक-प्रस्ताव

सोनगढ़ में श्री शांतिभाई जवेरी के बंगले पर दिनांक १-१-८१ को श्री कुन्दकुन्द कहान जैनतीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट के ट्रस्टियों एवं विशेष आमंत्रित व्यक्तियों की मीटिंग हुई, जिसमें अनेक महत्त्वपूर्ण निर्णयों के साथ पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के निधन पर अध्यक्ष की ओर से निम्नलिखित शोक-प्रस्ताव प्रस्तुत किया गया जो सर्वसम्मति से पास हुआ—

''अध्यात्मजगत के दैदीप्यमान सूर्य, परमोपकारी, पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी का निधन मुमुक्षु समाज पर एक वज्राघात है। पूज्य स्वामीजी श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैनतीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट के जीवनदाता थे, उनके मंगल आशीर्वाद से ही इसका जन्म हुआ है। उनके महाप्रयाण से अपने को अनाथ-सा अनुभव करता हुआ, यह ट्रस्ट उनके प्रति भक्तिभावपूर्वक श्रद्धांजलि समर्पित करता है।''

भरतक्षेत्र सूना हो गया

हे सातिशय ज्ञानधारी गुरुदेव! आप हम भक्तों को इस भरतक्षेत्र में ही छोड़कर चले गये, स्वर्गपुरी में विराज गये। हम क्या लिखें? कुछ लिखा नहीं जाता, कुछ बोला नहीं जाता, आपके विरह से हृदय रो रहा है।

स्वर्णपुरी के कण-कण में आपकी स्मृति स्फुरित हो रही है, आपने अनेक वर्षों तक स्वर्णपुरी में निवास किया है, यहाँ का कण-कण आपके पुनीत चरणों से पावन हुआ है।

आपने स्वर्णपुरी में निरंतर अपनी सूक्ष्म और मधुर वाणी का प्रवाह बरसाया है, आपके सान्निध्य में रहनेवाले अनेक भक्तों ने आपकी चैतन्यरस-भीनी वाणी सुनकर अपना जीवन सफल किया है, यथाशक्ति चैतन्यरसपान किया है। सौराष्ट्र आदि विभिन्न प्रांतों के भक्तों ने भी आपके ज्ञान की गुँजार सुनी है तथा आपकी वाणी का गंभीर नाद सुनकर अपना जीवन पवित्र किया है।

हे गुरुदेव! आपके अनेक प्रकार के स्मरण भुलाये नहीं जाते। इस आत्मा पर आपके असीम उपकार और आपकी स्मृतियाँ हृदय-पट पर उत्कीर्ण हो गये हैं। आपके असीम उपकारों का क्या वर्णन हो सकता है? आपकी अतिशययुक्त मुद्रा भारत के भक्तों को आत्मरुचि उत्पन्न कराती थी। आपकी अतिशय सूक्ष्म एवं गहन वाणी आश्चर्यकारी आत्मा को बतानेवाली थी तथा आपके अंतर से उछलता हुआ श्रुत-सिंधु कर्मोदय और ज्ञायकभाव का भेद-विज्ञान कराता था।

आपने प्रत्येक शास्त्र के गंभीर रहस्य खोलकर शुद्धात्मा का पथ सरल कर दिया है। आपके गुणों का क्या वर्णन करें? आप भारत के अजोड़ आध्यात्मिक सूर्य थे।

हे गुरुदेव! आपका द्रव्य अलौकिक है। आपके ज्ञान की, वाणी की तथा अगाध अपार गुणों की क्या महिमा करें? आपने सारे भारत के तीर्थों की यात्रायें कीं, देश-विदेश में जिनेन्द्र-प्रतिष्ठायें कीं, तथा अपनी मधुर वाणी बरसाकर, भव्य जीवों को दिव्य और आश्चर्यकारी आत्मा का स्वरूप समझाकर, लाखों जीवों का जीवन बदलकर उन्हें शुद्धात्मा के पथ में लगाया है।

हे गुरुदेव! आपने इस भरतक्षेत्र में पधारकर पूर्वयोग से स्वयं पुरुषार्थ करके अपने

अंतर में चैतन्यस्वभावधर्म का प्रकाश कर अपनी अमृतमयी वाणी के प्रवाह से भव्य जीवों के अंतर में चैतन्यधर्म के बीज बोए हैं। सारे भारत में चैतन्यधर्म का बगीचा लगाया है। आपके पावन चरणों से यह भरतक्षेत्र पुण्यशाली, प्रभावशाली और उज्ज्वल बना है।

हे गुरुदेव! आपकी विदाई से यह भरतक्षेत्र सूना हो गया है, स्वर्णपुरी के सारे भवन सूने हो गये हैं। अब आपकी अतिशययुक्त मुद्रा के दर्शन का योग भी नहीं है। आपकी अमृतमय वाणी के साक्षात श्रवण का योग भी नहीं है, मात्र आपकी स्मृति ही शेष रह गयी है।

हे गुरुदेव! आपका विरह असह्य है। आपके प्रताप से, आपके द्वारा बताये गये शुद्धात्म-पथ पर विशेष-विशेष प्रयाण करके पूर्ण पद प्राप्त करें यही भावना है। आपका साथ सदा रहे यही भावना है।

आपके चरणों में इस दास का परम भक्तिभावपूर्वक वंदन। -(पूज्य बेनश्री) चंपाबेन

साक्षात् चैतन्य-चिंतामणि

हे परम उपकारी पूज्य गुरुदेव! चिंतामणि रत्न और कल्पवृक्ष से भी आपका मूल्यांकन नहीं किया जा सकता क्योंकि वे तो जड़ हैं, परंतु आप साक्षात् चैतन्य-चिंतामणि थे। चैतन्य का स्पर्श करती हुई आपकी वाणी सुनकर हमारे आत्मा के अनंत गुण उछलते थे। आपकी देह के दर्शन से उसमें रहनेवाले चमकते हुए चैतन्य के दर्शन होते थे। अब उसका विरह बहुत असह्य लगता है।

हे गुरुदेव! ५५ वर्ष पूर्व वि० सं० १९८१ में गठड़ा चातुर्मास के समय आपका प्रथम दर्शन हुआ था, तब से आपकी शरण में हूँ। वि० सं० १९८९ में पूज्य बहनश्री चंपाबेन से साक्षात्कार हुआ था। हे गुरुदेव! आप हम दोनों को छोड़कर चले गये।

स्थानकवासी संप्रदाय में श्वेताम्बर ग्रंथ पढ़ते हुए भी आप उनकी सारी बात अध्यात्म पर ही घटित करते थे। उस समय भी आपकी वाणी में भेदज्ञान नितरता था। जब आपने हम दोनों बहनों से परिवर्तन करने की भावना व्यक्त की तब हमने कहा कि गुरुदेव! आप कल्याण के मार्ग पर ही चलनेवाले हैं, हमें आप पर पूरा विश्वास है। अनेक स्थानकवासी श्रीमंतों के विरोधों तथा रोटियाँ न मिलने की धमकी के बावजूद भी आप अपने निर्णय पर अडिग रहे और

महावीर जयंती के दिन वि० सं० १९९१ में आपने स्थानकवासी चिह्न-मुँह-पट्टी का त्याग किया।

तब से आपकी सम्यग्ज्ञान ज्योति दिन-प्रति-दिन वृद्धिंगत होती गयी। जब आप पद्मनंदि पंचविंशतिका के ऋषभजिन-स्तोत्र पर प्रवचन करते तब भगवान के प्रति आपकी भक्ति उछल पड़ती थी, ऐसा लगता था मानो आप हमें साक्षात् भगवान के दर्शन करा रहे हों।

हे गुरुदेव! अंतिम समय भी मुझे आपके दर्शन करने का लाभ मिला। देहत्याग के ४ दिन पूर्व आपने सल्लेखना की भावना व्यक्त की तथा ज्ञायक आत्मा का घोलन करते-करते समाधिपूर्वक देहत्याग किया। आपकी उस समय की ध्यान-मुद्रा आज भी आँखों में झूलती है।

आपके विरह में कहीं चैन नहीं पड़ती, हृदय फूट-फूट कर रोता है। आपने सारे भारत के जीवों को तत्त्वरसिक बनाया। सारे भारत के भक्त गद्‌गद् हृदय से श्रद्धांजलि व्यक्त करते हुए आपको याद कर रहे हैं।

आप शीघ्र ही शाश्वत् सुख प्राप्त करें तथा हम भी आपके साथ-साथ शाश्वत सुख प्राप्त करें—यही हमारा मनोरथ है।

—(पूज्य बेन) शांताबेन मणीलाल खारा

अब हम क्या करें ?

पूज्य स्वामीजी के निधन से भारी दु:ख है। हमने अनकों भव धारण करके बहुत मुश्किल से यह कल्याणकारी, मंगलमय वाणी का पान करानेवाला पाया था, उसे अब कहाँ खोजें ? उन्होंने जो कुछ दिया—भुलाया नहीं जा सकता, उन्होंने स्वाध्याय करना सिखाया, जगत के सामने स्वानुभूति का डंका बजाया। ऐसे पूज्य गुरुदेव के प्रति मेरी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित है।

— पंडित धन्नालाल, ग्वालियर (म०प्र०)

वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि

भारवि कवि की उक्त उक्ति लोकोत्तर पुरुषों की विवेचना में कही गयी है। श्री कानजीस्वामी ऐसे ही लोकोत्तर पुरुष थे। उन्होंने अपनी कुल-परंपरागत धर्म-पद्धति का संशोधन कर जिस अपरिग्रही जिनधर्म को स्वीकार किया, उस पर आजीवन वज्र की तरह अटल रहे। दुनिया की कोई शक्ति उन्हें विचलित नहीं कर सकी। दिगम्बर धर्म को स्वीकार करने के पूर्व की उनकी जीवनी जो कुछ रही हो वह मेरे सामने नहीं है। दिगम्बर जैन धर्म स्वीकार करने के बाद सं० २००५ में विद्वत्परिषद् के सोनगढ़ अधिवेशन के अवसर पर ही मुझे उनका प्रथम संपर्क आया, तभी से दिगम्बर जैन पत्र-पत्रिकाओं में उनकी ख्याति हुई।

स्वामीजी लोकोत्तर पुरुष थे। तीर्थंकरों तथा महतीय पूज्य आचार्यों को छोड़कर जैन समाज में इसप्रकार की क्रांति करनेवाला दूसरा कोई पुरुष न हुआ है, न है, न होगा।

विरोधियों ने जैनाचार्यों का उपयोग सोनगढ़ के बहिष्कार में किया और पूज्य श्री १००८ आचार्य धर्मसागरजी के नाम से [शायद उनके द्वारा नहीं] उनके दिगम्बर जैन न मानने की घोषणा की। यह समाचार जब स्वामीजी के पास गया तो सर्वप्रथम वे मुस्कराये, इसके दस मिनिट बाद ही भरी सभा में उन्होंने सिंहनाद किया कि:—

''संसार की कोई शक्ति हमें दिगम्बर धर्म से बाहर नहीं कर सकती। हम दिगम्बर जैन हैं! दिगम्बर जैन हैं!! दिगम्बर जैन हैं!!! हजार बार दिगम्बर जैन हैं। किसी के कहने मात्र से क्या हम दिगम्बर जैन न रहेंगे?''

बहिष्कार का यह कार्य दिगम्बर जैन इतिहास के लिए कलंक है। जैन इतिहास में, जैन झंडे के नीचे लोगों का आह्वान तो किया गया है, पर बहिष्कार नहीं। इस घटना की बात जब पूज्य आचार्य श्री १०८ विद्यासागरजी को ज्ञात हुई तो उन्होंने तत्काल कहा कि ''कुछ तो वात्सल्य रखना था।'' दो मिनिट मौन रहने के बाद बोले—''जैनों के साथ अब तक जैनधर्म का झंडा था, अब झंडा छिन गया, 'डंडा' ही रह गया मालूम होता है।''

ये थे उनके शब्द। बहिष्कार की कृति से जो उनको अंत:पीड़ा हुई, उसका द्योतन उनके शब्द कर रहे थे।

स्वामीजी अंत तक अपनी श्रद्धा पर वज्र की तरह अडिग रहे और फूल की तरह नरम भी अपने व्यवहार में रहे। कवि भारवि के शब्दों में कहना चाहिए कि :—

वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि।
लोकोत्तराणि चेतांसि को हि विज्ञातुमर्हति॥

वज्र से भी कठोर और फल से भी मृदु लोकोत्तर पुरुषों के चित्त को कौन जान सकता है ?

— पंडित जगन्मोहनलाल सिद्धांतशास्त्री, कटनी (म०प्र०)

जैन समाज के दयानन्द सरस्वती

पूज्य कानजीस्वामी जैन समाज के महर्षि दयानन्द सरस्वती थे। उनके दिगम्बर जैन साधना के क्षेत्र में आने के पूर्व विद्वानों को छोड़कर अन्य सामान्यजन निश्चय एवं व्यवहार का नाम तो जानते थे किंतु उन्होंने उनकी व्याख्या, विश्लेषण, उनकी तारतम्यता तथा जीवन में उनकी उपयोगिता का ज्ञान पूज्य स्वामीजी से सीखा। कहा जाता है कि यदि दयानन्द सरस्वती भारतीय धर्मों, पुराणों एवं दर्शनों को गंभीर तुलनात्मक अध्ययन कर वैदिक एवं इतर मान्यताओं की गहरी छानबीन कर उनके तथाकथित अव्यावहारिक पक्षों की कटु आलोचना न करते तो विविध संप्रदायों के लोग उसे तिलमिलाकर अपने-अपने शास्त्रों का गहन अध्ययन भी न करते। इसीप्रकार कानजीस्वामी भी निश्चय एवं व्यवहार का यदि बहुआयामी विश्लेषण न करते, तो हम लोग उनके केवल प्रारंभिक ज्ञान तक ही सीमित रह जाते। किंतु स्वामीजी के प्रयत्नों से आज जैन समाज का बच्चा-बच्चा उनके रहस्य तथा महत्त्व को जान गया है।

स्वामीजी जैन समाज के प्रथम संत विद्वान थे जिन्होंने जैनागमों एवं अनु-आगम ग्रंथों का सूक्ष्म अध्ययन कर नवीनतम दृष्टि से उनकी मौलिक व्याख्यायें प्रस्तुत कीं। उनका यह भी दृढ़ विश्वास था कि समाज के नवजागरण के लिये जैन सिद्धांतों की सीधी-सादी सरल भाषा तथा उदाहरणपूर्ण मार्मिक शैली में व्याख्या की जाये। इसके लिये उन्होंने समर्पित भाव से समाज एवं साहित्य-सेवी एक विद्वत्मंडली तैयारी की तथा अनेक महत्त्वपूर्ण ग्रंथों के विविध भाषात्मक अनुवाद एवं सर्वोपयोगी अल्पमोली संस्करण तैयार कर उन्हें सर्वसुलभ बनाया। इतना ही नहीं, मुमुक्षुजनों के लिये सर्व सुविधासंपन्न अनेक स्वाध्याय केंद्रों की भी स्थापना की और इसप्रकार सर्वत्र अध्यात्म की ज्योति जगाई।

उनका प्रभाव भारत तक ही सीमित नहीं रहा। सात समुद्र पार विदेशों में भी विस्तुत हो गया। वहाँ उनके विद्वतापूर्ण प्रवचनों की धूम मच गई। नैरोबी (केन्या) जैसे विदेशों नगरों में अपने अनुयायियों के अनुरोध पर उन्होंने यात्रायें की और अमृतोपम प्रवचन कर वहाँ पर भी उन्होंने श्रमण संस्कृति का प्रचार किया।

वे न तो मंत्र-तंत्र जानते थे और न उनमें विश्वास ही करते थे, फिर जन सामान्य को जो उन्होंने चमत्कृत किया उसमें मूल कारण था उनका स्वयंनिर्मित तेजस्वी व्यक्तित्व, ओजस्विनी वक्तृत्व-शक्ति, त्यागपूर्ण सादा जीवन, समशील निरहंकारी वृत्ति, मुमुक्षुजनों के प्रति प्रमोद भावना एवं विद्वानों के गुणों के प्रति अनुराग भावना। इधर कुछ दिनों से कुछ विद्वान उनके विचारों का विरोध करने लगे थे तथा भावावेश में आकर वे उनके प्रति कुछ कटु शब्दों का प्रयोग भी करने लगे थे, किंतु स्वामीजी ने कभी भी उसका बुरा नहीं माना और न बदले में अपना रोष ही प्रकट किया। एक सच्चे आध्यात्मिक संत की तरह वे उनके प्रति निरंतर क्षमाशील बने रहे।

भौतिक दृष्टि से वे भले ही हमारे बीच न हों, किंतु उनके सत्कार्य एवं अमिट धवल-कीर्ति हमारे लिये प्रेरणा के अजस्र स्रोत बने रहेंगे। सोनगढ़ के उस महान संत को हमारा शत-शत नमन।

— **डॉ० राजाराम जैन,** ह० दा० जैन कालेज, आरा (बिहार)

एक युगपुरुष का अवसान

सोनगढ़ के संत श्री कानजीस्वामी के निधन से जैनाकाश का एक जाज्वल्यमान नक्षत्र सदा के लिए अंतर्धान हो गया। इस शून्यता की पूर्ति हो सकेगी यह कल्पना करना आज अत्यंत कठिन प्रतीत होता है। यद्यपि आज पूरे भारतवर्ष में उनके अनुयायियों की संख्या काफी फैली हुई है—पर भविष्य अदृश्य है—कौन कह सकता है कि उनका स्थान कौन ग्रहण करेगा?

वे युगांतकारी ऐतिहासिक महापुरुष थे। विगत अनेक शताब्दियों में ऐसा दूसरा उदाहरण नहीं मिलता, जिसके प्रभाव से हजारों-हजारों अन्य धर्मावलंबियों ने अपना मत त्यागकर दिगम्बर जैनधर्म को ग्रहण किया हो, धर्म परिवर्तन किया हो। धर्म परिवर्तन मनुष्य जन्म में अत्यंत दुष्कर कठिन कार्य है। गतानुगतिक परंपरा के आधार पर ही जाति और धर्म की

शृंखला जुड़ी रहती है। पर स्वामीजी के आत्मपरक प्रवचनों और दिगम्बर जैनधर्म में अध्यात्मवाद की विलक्षण महिमा को सुनकर, अनादिकाल से भ्रमित दिग्विमूढ़ता का परित्याग कर अन्य मतालम्बी भाईयों ने दिगम्बर जिनमत के पंथ को हृदय से ग्रहण किया। इसे यदि पुनर्जन्म कहें तो कोई अत्युक्ति न होगी। मैं इसे एक असाधारण ऐतिहासिक घटना मानता हूँ।

— **स० सि० धन्यकुमार जैन,** कटनी (म०प्र०)

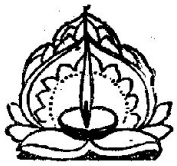

जीवनभर आत्मा के गीत गाते रहे

श्री कानजीस्वामी प्रारंभ में श्वेताम्बर स्थानकवासी संप्रदाय के संत थे। दिगम्बर जैनाचार्य कुन्दकुन्द के समयसार ग्रंथ ने उनके विचारों में क्रांतिकारी परिवर्तन ला दिया था। एकांत स्थान में बैठकर उन्होंने इस ग्रंथ को अनेक बार पढ़ा, मनन-चिंतन किया। फलस्वरूप वि० सं० १९९१ में आपने दिगम्बर धर्म को धारण कर सामान्य अव्रती रहना स्वीकार कर लिया और साधुपने का लोभ व प्रतिष्ठा का आकर्षण छोड़ दिया, जो उन्हें स्थानकवासी संप्रदाय में प्राप्त था। इस मत-परिवर्तन के कारण श्वेताम्बर संप्रदाय के लोग आपके पहले तो घोर विरोधी बन गये, पश्चात् धीरे-धीरे एक-एक कर अधिकांश स्वामीजी की शरण में आ गये।

आपने वेस्टनों में लिपटे ग्रंथों को जन-जन की वस्तु बना दिया। आपके व्यक्तित्व में चुंबकीय आकर्षण था, जो भी आपके निकट आया, वह आपका हो गया। आकर्षण और कुछ नहीं; मात्र सत्य की दृढ़ता से, निर्भयता से पूर्ण आत्मविश्वास के साथ प्रतिपादन करना; यही वह आकर्षण था जो निष्पक्ष जगत को रुचता था, जँचता था। स्वार्थ कुछ था नहीं; आजीवन बालब्रह्मचारी आत्मसाधक रहे। स्वार्थों से बहुत ऊपर उठे हुए, अत्यंत दयालु और सहृदय साधक, जीवनभर आत्मा के गीत गाते रहे।

ऐसे पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के चरणों में अपनी विनम्र श्रद्धांजलि समर्पित करता हूँ।

—**डॉ० राजेन्द्र बंसल,** शहडोल (म०प्र०)

कल्याणमार्ग के पथिक

अध्यात्मरसिक, अध्यात्मप्रवक्ता और अध्यात्म के प्रचारक श्री कानजीस्वामी ने सच्चे कल्याणमार्ग का पथिक बनने के लिये अपनी पूज्यता, अपना सामाजिक सम्मान तथा सवस्त्रवाली मुनि अवस्था त्यागकर दिगम्बर जैनधर्म के अव्रती श्रावक का पद सहर्ष स्वीकार कर लिया था। श्री कानजीस्वामी जब अपने निकटवर्ती अनुयायियों सहित दिगम्बर जैन हो गये तो उनकी समाज ने अपना रोष जिसप्रकार प्रकट किया होगा उसका अनुमान हम कर सकते हैं। दूसरी ओर दिगम्बर जैन समाज में भी उनका सशक्त विरोध हुआ। इन विरोधों को श्री कानजीस्वामी ने अपनी सच्ची श्रद्धा के कारण ही सहन किया। यदि दूसरा कोई कच्ची श्रद्धावाला होता तो ऐसा विरोध होने पर दिगम्बर जैनधर्म छोड़ बैठता। स्वामी कर्मानन्दजी द्वारा अंत समय के पास जैनधर्म छोड़ देने में किसी जैनी के ऐसे ही चुभनेवाले शब्द कारण थे।

दिगम्बर जैन समाज में स्थान-स्थान पर मुमुक्षु मंडलों के नाम से स्वाध्याय की अच्छी परंपरा का प्रसार, आध्यात्मिक ग्रंथों का सस्ता प्रकाशन, लगभग २० हजार श्वेताम्बर जैनों को दिगम्बर जैनधर्म में दीक्षित करना, टोडरमल स्मारक जैसे सुव्यवस्थित महाविद्यालय की स्थापना, कई स्थानों में दिगम्बर जैन मंदिरों का निर्माण (जहाँ उन मंदिरों की स्थापना की आवश्यकता थी) तथा शिक्षण-प्रशिक्षण शिविरों के आयोजन-जैनधर्म के प्रचार-प्रसार के ऐसे साधन हैं, जिनसे जैनधर्मावलंबियों को जैनधर्म का ज्ञान और सच्ची श्रद्धा होती है। रूढ़िवादिता के निरसन में इससे बड़ी सहायता मिली है। श्री कानजीस्वामी के अनुयायी अपने विद्वानों का जैसा सम्मान करते हैं, वैसा सम्मान करना दूसरे नहीं जानते हैं। श्री कानजीस्वामी में ऐसी परख थी कि उनके यहाँ ५० से अधिक बाल-ब्रह्मचारिणी महिलायें भी धर्माराधना में लगी हैं। वे सच्चे अर्थों में कल्याणमार्ग की पथिक हैं। पंडित बाबूभाई मेहता, डॉ० हुकमचंद भारिल्ल तथा पंडित ज्ञानचंद जैसे कर्मठ और सुयोग्य अनेक प्रवचनकर्ताओं को खींच लेना उनकी सूझ-बूझ का परिणाम था जिसके कारण लक्ष्यभूत कार्यों को प्रचार-प्रसार मिला है।

मैं उनके उज्ज्वल कार्यों को दृष्टि में रखते हुए दिवंगत आत्मा की शांति की कामना करता हूँ और अपनी नम्र श्रद्धांजलि समर्पित करता हूँ।

— **डॉ० कन्छेदीलाल जैन,** शासकीय महाविद्यालय, **शहडोल** (म०प्र०)

क्रांतिकारी महापुरुष

दो हजार वर्ष पूर्व आचार्य कुन्दकुन्द ने जो अध्यात्म की दुन्दुभि बजाई उसी की पुनरावृत्ति पूज्य कानजीस्वामी ने की। वे युगपुरुष, युगसृष्टा एवं क्रांतिकारी महापुरुष थे। उन्होंने सोतों को जगाया, जागनेवालों को सही मार्ग बताया।

उन्होंने आत्मकल्याणार्थ विविधि रचनात्मक कार्य किये। समयसार का पारंगत पण्डित चला गया। जिसने समाज के प्रति अनंत उपकार किये ऐसे महापुरुष के चरणों में शतशः श्रद्धांजलि समर्पित है। — **पंडित ज्ञानचंद 'स्वतंत्र'**, गंजबासौदा (म०प्र०)

अध्यात्मयुगसृष्टा पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी का देहावसान—एक वज्राघात

अध्यात्मयुगसृष्टा, अध्यात्मदिवाकर पूज्य श्री कानजीस्वामी का देहावसान का समाचार मेरे संपूर्ण जीवन का एक गंभीर वज्राघात है। पूज्य गुरुदेव के समागम एवं सान्निध्य ही में तो अनादि-अनंत-आनंदघन अपने आत्मजीवन को समझा है, इसके पूर्व तो जीवन का परमार्थ अर्थ, अमूल्य मूल्य एवं सम्यक् उपयोग का ज्ञान ही नहीं था।

पूज्य गुरुदेव का व्यक्तित्व प्रखर प्रभाकर की भाँति था, जिसकी किरणों से हजारों नर-नारियों की मोहनिद्रा खुली थी, लाखों ने जागने हेतु अंगड़ाई ली थी। हजारों नर-नारी उनके पथानुगामी बने थे, लाखों ने उन्हें अपने मनमंदिर में बिठाया था, कुछेक को उनके प्रकाश एवं तेज से हैरानी थी; परंतु पूज्य गुरुदेव तो समानरूप से समस्त नर-नारियों के प्रातः करुणासागर थे। उनकी दृष्टि में सभी भगवान आत्मा थे।

वे जैन अध्यात्म विद्या के प्रकाशगृह, प्रकाशस्तंभ, प्रेरणास्रोत तथा प्रकाशमान प्रभाकर थे। उनका सुयोग आत्महितैषियों का भाग्योदय था। क्या कभी सूर्य जगत की प्रतिक्रियाओं से प्रभावित होता है? अर्थात् कदापि नहीं। उसका तो काम है प्रकाशित रहना और अन्य को प्रकाशित करना। पूज्य गुरुदेव भी तो ऐसे ही प्रकाशमान सूर्य थे, जो अपनी आध्यात्मिक किरणों से स्वयं को तथा जगत को निरंतर प्रकाशित करते रहे।

अब यह सूर्य दुनिया की दृष्टि में अस्त हो गया है, किंतु उनके प्रकाश से प्रकाशित-प्रज्ज्वलित हजारों-लाखों दीपक उनके द्वारा प्रदर्शित मार्ग को युगों तक आलोकित करते रहेंगे। पूज्य गुरुदेव के अभाव में उनके द्वारा प्रज्ज्वलित दीपकों का दायित्व अब और भी अधिक बढ़ गया है। उन्हें अनेक झंझावातों से गुजरना होगा, फिर भी बुझना नहीं होगा; अपितु दीप से दीप जलाते रहना होगा तथा अध्यात्म प्रकाश की परंपरा को चिरकाल तक संरक्षित एवं संवर्धित करते रहना होगा। यही उनके उपकृतों की कृतज्ञता एवं उनके प्रति यथार्थ श्रद्धांजलि होगी।

इन्हीं श्रद्धा-सुमनों को पूज्य गुरुदेव के चरणों में समर्पित करता हुआ अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ। — **उत्तमचंद जैन, व्याख्याता** (संस्कृत), **सिवनी** (म०प्र०)

वे सदा याद रहेंगे

पूज्य स्वामीजी का अभाव सदैव जैन समाज को उनके व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व की तो याद दिलाता रहेगा, लेकिन उनकी रिक्तता अर्थात् वियोग की पूर्ति होना कदापि संभव नहीं है। ज्ञान-पिपासु जन उनके मार्ग का अनुसरण कर स्व-पर-कल्याणकारी भावना का प्रचार-प्रसार करें—यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि कही जावेगी।

— **भगवानदास जैन (फर्म भगवानदास शोभालाल जैन), सागर** (म०प्र०)

चैतन्य जौहरी के चरण-कमलों में

श्री सनातन दिगम्बर जिनशासन की अध्यात्म-परंपरा को पुनरुज्जीवित करनेवाले, इस युग की अनुपम विभूति, स्वयंबुद्ध, महान आध्यात्मिक संत, निर्भीक सत्यदृष्टा, कुन्दकुन्दादि परम दिगंबराचार्यों के वियोग के दु:ख को उपशमन करनेवाले, अभीक्ष्ण-ज्ञानोपयोगी, परमोपकारी, बालब्रह्मचारी पूज्य श्री कानजीस्वामी—जो विगत ४५ वर्षों से निजरस से परिपूर्ण विज्ञानघन चैतन्यचमत्कारमयी शुद्ध अन्त:तत्त्वस्वरूप स्वयं कारणपरमात्मा समयसार भगवान आत्मा का वास्तविक स्वरूप नय-प्रमाण-निक्षेप से दर्शाते आ रहे थे, जिनके देदीप्यमान चेहरे पर सदैव एक आध्यात्मिक मंजुल-मुस्कान अठखेलियाँ करती रहती थीं, जो प्रवचन में आत्मानंद की मस्ती में मग्न हो अपनी आत्मतल-स्पर्शी वाणी द्वारा चातक पक्षीवत् बैठे श्रोतागणों को दिन-महीना-पहर का भेद विस्मृत करा देते थे, जो सिंहवृत्ति से डंके की चोट

सर्वज्ञदेव कथित वस्तुस्वरूप का निरूपण करते आ रहे थे, जो अज्ञानीजनों द्वारा घोर विरोध किये जाने पर भी निश्चयमोक्षमार्ग के प्रतिपादन में कमर कस के डटे रहे; ऐसे इस युग के अशांतिपूर्ण भौतिक वातावरण में 'आत्मधर्म' एवं सदाचरण व सक्व्यञ्चत्वाचरण का प्रसार कर जिनशासन की महती प्रभावना करनेवाले, मोक्षमार्ग में निश्चयपूर्वक व्यवहार की सापेक्षता एवं यथास्थल प्रयोजनीयता ज्ञापित करनेवाले, अपने सातिशय पुण्यशाली तेजस्वी व्यञ्चित्त्व से अगणित व्यक्तियों के जीवन को बदल देनेवाले चैतन्य जौहरी परम कृपालु आत्मार्थी सत्पुरुष श्रीमद् कानजीस्वामी के चरण-कमलों में शत-शत वंदना करता हुआ श्रद्धांजलि समर्पण करता हूँ।

— **ब्र० हेमचंद जैन 'हेम'**, स्टीम टरबाईन इंजीनियर, **पिपलानी, भोपाल** (म०प्र०)

पूज्य कानजीस्वामी आध्यात्मिक प्रेरणा के स्त्रोत थे

प्रथम बार उनकी प्रतिभा व वाणी को सुनकर मेरे ऊपर बड़ा प्रभाव पड़ा, परंतु उनके मूल तत्त्व की विशेष जानकारी प्राप्त नहीं कर पाया। उसके बाद 'आत्मधर्म' पत्रिका एवं वहाँ से पधारे विद्वानों द्वारा उनके विचारों को समझने का अवसर मिला व अनेकों बार उनकी वाणी सुनने व अपनी शंकाओं के समाधान करने के भी अवसर प्राप्त हुए।

सोनगढ़ तीर्थ बन गया व उनकी प्रेरणा से हजारों बहन-भाइयों ने आध्यात्मिक ग्रंथों का स्वाध्याय करना प्रारंभ कर दिया। उनकी वाणी द्वारा वीतरागता-प्राप्ति के मार्ग की प्रेरणा से समाज में एक क्रांति का वातावरण बन गया। जो क्रियाओं को धर्म मान रहे थे, उनकी भी आँखें खुल गईं कि वास्तविकता क्या है ? शंका-समाधान के समय जो शंकायें उनके सामने आती थीं, वे तुरंत शास्त्रों के उदाहरण सहित उनका उत्तर देते थे।

स्वामीजी एक विभूति थे, उनके चले जाने से आध्यात्मिक जगत के ऊपर एक कठोर वज्रपात हुआ है। मैं अपनी श्रद्धा के सुमन उनके चरणों में अर्पित करता हूँ।

— **भगतराम जैन,** मंत्री, अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद्, **नई दिल्ली**

अध्यात्मिक जगत सूना हो गया

जैसे ही वज्र की भाँति दुखदाई यह समाचार मिले कि युगांतकारी, आध्यात्मिक, सोनगढ़ के संत, पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी इस असार संसार में नहीं रहे, एक अजीब स्तब्धता-सी आई और विश्वास ही नहीं हो रहा था कि मेरे इस संपूर्ण जीवन की धारा को मोड़ देनेवाले, वीतरागता का सच्चा मार्ग बतानेवाले महान संत का निधन हो गया है।

पूज्य गुरुदेव के लिए किन शब्दों में श्रद्धा-सुमन अर्पित करूँ, क्योंकि अनंत जन्मों से भटकते हुए जीवों को एवं मुझे सच्चे आत्महित का उपदेश दिया; उनका गुणगान एक नहीं, अनेक जिह्वाओं से करूँ तो थोड़ा है।

भारतीय जैन समाज को जो क्रियाकांडों में फँसकर 'काम जड़ का और नाम धर्म का' कर रही थी—ऐसी उल्टी मिथ्या मान्यताओं से छुड़ाकर लाखों मानवों को मोक्ष का सच्चा रास्ता दिखाया। आपके द्वारा २०वीं शती में जो आध्यात्म की ज्ञानगंगा प्रवाहित की गई—वह निरंतर प्रवाहित होती रहेगी। इस शती में आध्यात्म का जो लोप था उसके पुनरुत्थान के सूत्रधार आप ही थे। आज आपके बिना आध्यात्म जगत सूना हो गया है। फिर भी आपके द्वारा उसकी जड़ें इतनी मजबूत हैं कि युगों-युगों तक यह दुन्दुभि बजेगी और इस दुन्दुभि के साथ आपका नाम चिरस्मरणीय रहेगा। — **सरवनलाल जैन,** शास्त्री, सरधना (उ०प्र०)

अध्यात्म जगत का सूर्य अस्त

श्रीमान् परमपूज्य सद्धर्मप्रभावक, अध्यात्मयोगी, परमोपकारी, सत्पंथनुयायी, महान संत गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के निधन से अध्यात्म जगत का सूर्य अस्त हो गया है। बाहरी क्रियाकांड, पूजा-पाठ, व्रत-उपवासादि क्रियाओं को ही धर्म मानकर लौकिक समृद्धि में ही रीत हो रहे, संसार-सागर में भटकनेवाले लाखों लोगों को सन्मार्ग दिखाकर भव्य जीवों को मोक्षमार्ग की नैय्या में बिठाकर मोक्षरूपी नगरी में पहुँचाने के लिये आपने कुशल नाविक का कार्य करके महान परोपकार किया है। आपके द्वारा जगह-जगह देश एवं विदेशों में भी दिगम्बर जैन मंदिर, मानस्तंभ, समवसरण मंदिरों की सैकड़ों की संख्या में स्थापना होकर धर्म की महान प्रभावना हुई है। जयपुर में टोडरमल स्मारक भवन का निर्माण एवं इसके द्वारा संचालित

साहित्यिक एवं शैक्षणिक सभी प्रवृत्तियाँ पूज्य कानजीस्वामी के मार्गदर्शन एवं प्रेरणा का फल हैं। आपके ओजस्वी भाषणों से धर्मरूपी अमृत वर्षा होती थी, और जनता मंत्र-मुग्ध होकर, सुनकर, समझकर और उनके उपदेशों पर आचरण करके आत्मकल्याण करती थी। अब उनके निधन से अध्यात्म का स्रोत रूपी सूर्य अस्त हो गया है। उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि हम उनके बताये हुए सन्मार्ग पर चलकर आत्मकल्याण करें।

अंत में मैं पूज्य स्वामीजी के प्रति अत्यंत विनयपूर्वक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए दिवंगत आत्मा की शांति हेतु हृदय से कामना करता हूँ। — **डॉ० ताराचंद जैन बक्षी, जयपुर**

उनका संदेश निरंतर व्यापक होता जायेगा

पूज्यश्री कानजीस्वामी ने जैन समाज को सामयिक एवं आधुनिक दृष्टि दी और जैन जीवन-दर्शन को अपने जीवन में उतारा तथा अपने शिष्यों को उपदेश दिये—उसे कभी भुलाया नहीं जा सकता। इस शताब्दी में जो गिने-चुने धर्माचार्य हुए, उनमें स्वामीजी का स्थान बहुत ही ऊँचा है।

मेरे जैसे आधुनिक मस्तिष्कवाले व्यक्ति के लिये धर्म की ओर झुकाव उनके सत्-विचारों से ही हुआ है। उन्होंने अपने पीछे आप जैसे योग्य समाजचेता एवं विद्वान व्यक्ति छोड़े हैं, जिनसे उनका संदेश निरंतर व्यापक होता जायेगा।

स्वामीजी का अपनों से भिन्न विचारवाले व्यक्तियों के प्रति समभाव ही मुख्य कारण रहा कि उनके परिकरों की संख्या दिनों-दिन बढ़ती ही गई है और आज सोनगढ़ एक सांस्कृतिक केन्द्र बन गया है। मैं उन्हें अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

— **अक्षयकुमार जैन,** भू० पू० सम्पादक, नवभारत टाइम्स, **नई दिल्ली**

अद्‌भुत क्रांतिकर्ता गुरुदेव

अध्यात्मक्षेत्र में इस युग के अद्‌भुत क्रांतिकर्ता पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी ने लाखों जीवों को प्रशस्त परमार्थ मार्ग दिखाया। उन्होंने आचार्यों द्वारा प्रतिपादित जिनागम के अंतर्हार्द को डंके की चोट स्पष्ट घोषित करके जीवों का महान उपकार किया है। पूज्य जिनवाणी का अभूतपूर्व विपुल प्रकाशन तो हुआ ही, साथ में उसको स्थायित्व व अमरत्व-प्रदायक एक

अनुपम जीवंत छापाखाना 'श्री टोडरमल जैन सिद्धांत महाविद्यालय' भी उनके निमित्त से निर्मित हुआ है—जो निस्संदेह युगांतरों तक सम्यग्ज्ञान के प्रचार-प्रसार द्वारा भू-मंडल को अज्ञानांधकार से मुक्त करता रहेगा। ऐसे ज्ञानपुंज गुरुदेव को मेरी सादर श्रद्धांजलि।

— वैद्य गंभीरचंद जैन, अलीगंज (उ०प्र०)

महासंत श्री कानजीस्वामी

दुनिया की सारी क्षुद्रता, गंदगी और मिथ्याभ्रांतियों से ऊपर उठकर, भोग-विषय के कुचक्र को तोड़कर, पंथ-व्यामोह को साहसपूर्वक तिलांजलि देकर दुनिया के कोने-कोने में अध्यात्म का भव्य वातावरण प्रसार करनेवाले महासंत श्री कानजीस्वामी के चरणों में सविनय श्रद्धांजलि।

—हीराचंद बोहरा, बजबज (कलकत्ता)

दिगम्बर समाज का महान उपकार किया

इसमें दो राय नहीं कि स्वामीजी का पुण्य-प्रताप बड़ा प्रबल था। गुजरात प्रांत में सोनगढ़ को न केवल उन्होंने अपना निवास-स्थल बनाया, वरन उसे एक तीर्थरूप में ही परिणित कर दिया, जहाँ मुमुक्षुजन बड़े उत्साह और उमंग से भाग लेते थे। पहले यह तत्त्वज्ञान केवल विशेष ज्ञानियों तक ही सीमित था, जिसे उन्होंने सर्वसाधारण की चर्चा का विषय बनाकर दिगम्बर समाज का महान उपकार किया है। आज समाज के युवावर्ग में चेतना के जो लक्षण दिखाई दे रहे हैं, उससे समाज में खुशी की एक लहर-सी दौड़ गई है और यह आशा बँधने लगी है कि धर्म-दिवाकर निकट भविष्य में अस्तंगत होनेवाला नहीं है।

— कपूरचंद बरैया, लश्कर-ग्वालियर (म०प्र०)

वे एक आध्यात्मिक चक्रवर्ती थे

श्रमण संस्कृति के पुनर्जागरण की दिशा में पूजनीय श्री कानजीस्वामी का महान् योगदान चिरस्मरणीय है। वे अद्वितीय आध्यात्मवेत्ता और आत्मदृष्टा सत्पुरुष थे। सत्य को कहने और उसे स्वीकारने की उनमें अद्‌भुत क्षमता थी। श्रद्धेय स्वामीजी भारतीय आध्यात्म-जगत की उन विभूतियों में थे, जिनमें प्रतिभा, पराक्रम, पवित्रता और पुण्य की प्रचुरता रही है।

पूज्य स्वामीजी में अनवरत अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोग की पावन-गंगा अजस्त्र रूप से प्रवाहित थी। आगम के अगम और गंभीर रहस्य अनेकांत की मथानी से मथकर ऐसे निकलते थे जैसे कोई सफल गोताखोर सागर की अतल गहराइयों से मोती निकालता है।

आपकी पीयूष-परिसिक्त वाणी सदा—सर्वदा मंगलदायिनी रहेगी क्योंकि वह जिनवाणी-अनुगामिनी रही है। आपके महान पराक्रमी व्यक्तित्व से जन-जन को सतत् सुमार्ग और प्रेरणा प्राप्त होती थी। मुखमंडल की तेजस्विता एवं कंठ की (स्वर विशेष) गंभीरता आपके प्रगाढ़ ब्रह्मचर्य के परिचायक थे। अपने विरोधियों के प्रति अत्यंत क्षमाशील, सागर की तरह उदार और गंभीर थे। संयोग की विचित्रता थी कि आप ऐसे वातावरण में जन्मे जहाँ आत्मोपलब्धि तो दूर, आत्मतत्त्व की चर्चा भी दुर्लभ थी। किंतु आपका पुरुषार्थ उग्र था, अतः स्वयं प्रबुद्ध हो अपने प्राप्य को प्राप्त कर लिया। धन्य है प्रातः स्मरणीय श्री कुन्दकुन्दस्वामी जिनके अमर 'समयसार' ने एक अंधेरे में अटके से, भवसागर में भटके से पुरुष को न केवल उससे उभार दिया, अपितु उस भव्य पुरुष को भी समयसारमय, सूर्य जैसा तेजस्वी और प्रकाशपुंज बना दिया। चिरवंदनीय 'समयसार' पूज्य स्वामीजी का जीवन बन गया था और स्वामीजी ने 'समयसार' को जन-जन का जीवन बना दिया। निस्संदेह 'समयसार' की संपदा पाकर स्वामीजी अपरिमित ऐश्वर्य के स्वामी एक चक्रवर्ती से कहीं अधिक सुखी और संतुष्ट थे। किम्बहुना—मैं एक महान आध्यात्मिक चक्रवर्ती, युग के प्रकाश और प्रेरणापुंज परम पूजनीय श्री कानजीस्वामी के अनेक अवदात गुणों के प्रति अपनी सादर और श्रद्धासिक्त भावांजलि समर्पित करता हूँ।

— डॉ० कपूरचंद्र जैन, आयुर्वेदाचार्य, **सागर (म०प्र०)**

महान संत श्री कानजीस्वामी

महान संत श्री कानजीस्वामी के असामयिक निधन से समाज को अपूरणीय क्षति हुई है। उन्होंने लाखों श्वेताम्बरों को दिगम्बर धर्म की प्रेरणा दी। जैनधर्म के व्यापक प्रचार के लिए उन्होंने विदेश यात्रा भी की। जगह-जगह मुमुक्षु मंडल एवं वीतराग-विज्ञान पाठशालायें उनकी प्रेरणा से खुलीं, जिससे समाज धर्म के प्रति परिष्कृत हो सका।

ऐसी महान भव्य व उत्कृष्ट आत्मा को शांति एवं सद्गति प्राप्त हो ऐसी कामना है।

— नर्मदाबाई जैन, डोंगरगढ़ (म०प्र०)

धर्म तो मात्र कानजीस्वामी के पास है

प्रारंभ में पूज्यश्री कानजीस्वामी के प्रति मुझे पूर्वाग्रह होने से बड़ा भारी विरोध था। श्वेताम्बर स्थानकवासी समाज में होने के कारण मैंने उनके विरुद्ध बहुत हल्की बातें सुनी थीं और उन बातों को सही मानकर मैं उनकी बहुत अवज्ञा और विरोधना करता रहा।

एक दिन स्वामीजी के प्रति मेरा यह अज्ञान और मिथ्या विरोध देखकर मेरे एक मित्र ने बहुत करुणाभाव से कहा कि ''एक वकील होते हुये महाराज सा० (श्री कानजीस्वामी) की बात सुने बिना, विचारे बिना, दूसरों की बात पर अंधविश्वास कैसे कर बैठे ?

यह सच था कि मैंने स्वामीजी को पहले कभी सुना नहीं था, वे क्या कहते हैं—इस पर कभी गंभीरता से विचार नहीं किया था। अत: मैंने मित्र की सलाह मानकर स्वामीजी की बात को सुनने, समझने और उस पर गंभीरता से विचार करने का निश्चय कर लिया।

महाराज साहेब (स्वामीजी) के पहले मैंने पाँच-छह प्रवचन सुने, पर मैं उनकी बात कुछ न समझ पाया। और बात न समझ पाने से औरों की तरह उपेक्षा कर मैं अपने पुराने अभिप्राय को कायम रख सकता था, परंतु वकील होने के कारण मैंने ऐसा नहीं किया तथा महाराजश्री की बात को पूर्ण समझने का दृढ़ निश्चय किया और इसके लिये मैंने तीन साल सतत् प्रयत्न चालू रखकर स्वामीजी के प्रवचन सुने और अभ्यास किया।

फलस्वरूप मैं सही वस्तुस्थिति से परिचित हुआ। तब मुझे अपने पिछले व्यवहार और बर्ताव पर बहुत पश्चाताप हुआ, अपने आपको धिक्कारा, भारी आत्मग्लानि हुई, अपने पूर्व विचारों से शर्मिन्दा हुआ—और मैंने मन ही मन कई बार महाराजश्री के प्रति अंत:करण से माफी माँगी। महाराजश्री के प्रति अत्यंत आदर व पूज्यभाव हुआ।

मुझ में इतना परिवर्तन देखकर कई लोगों को आश्चर्य हुआ। मैं जगह-जगह कहने लगा था कि सारे भारत में कहीं धर्म है तो मात्र श्री कानजीस्वामी के पास है।

— **दिनेश जे० मोदी,** एडवोकेट, सुप्रीमकोर्ट, **बम्बई**

प्रेरणा के मूल-स्त्रोत

आज समाज में स्वाध्याय के प्रति जो लगाव देखने में आ रहा है, उसका श्रेय स्वामीजी को ही है। जैन साहित्य के व्यापक प्रचार एवं शिक्षण शिविरों के आयोजन आदि की प्रेरणा

मूलरूप से उन्हीं के द्वारा प्राप्त हुई है। उनके निधन से संपूर्ण जैन समाज को जो क्षति एवं रिक्तता उत्पन्न हुई है, उसकी पूर्ति होना असंभव है। हम सब की श्रद्धांजलि उनके प्रति तभी साकार हो सकती है, जब हम उनके बताये मार्ग का अनुसरण करें। — **पंडित धर्मदास जैन, बड़ौत (उ०प्र०)**

अपूरणीय क्षति

पूज्य कानजीस्वामी के आकस्मिक निधन से हम सब किंकर्तव्यविमूढ़ से हो गये हैं। उनके निधन से समाज को जो क्षति पहुँची है, वह वास्तव में अपूरणीय है। उनके कार्य को आगे बढ़ाकर ही हम उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि समर्पित कर सकते हैं।

— **दशरथ जैन,** भू०पू० विधायक, **छतरपुर (म०प्र०)**

महान आत्मदर्शी

परमपूज्य उपकारी संत श्री कानजीस्वामी के निधन से एक क्रांतिकारी व दिव्यदृष्टि प्रदान करनेवाला व्यक्तित्व विलुप्त हुआ है। भारत भर में जगह-जगह अध्यात्म की गंगा स्वामीजी ने प्रवाहित की। समयसार को एक रूखा, समझ में न आनेवाला शास्त्र समझा जाता था, पर परम पुण्यप्रतापी पूज्य स्वामीजी ने सामान्य से विद्वान तक उसका मर्म अवगत कराया। ऐसी सामाजिक तथा धार्मिक क्रांति सम्भवत: भगवान महावीर के अनंतर प्रथमत: इतिहास में दिखाई देती है। उन्होंने हजारों की संख्या में अध्यात्म ग्रंथ प्रचारित किये। समाज में एकता की कड़ी उन्होंने ही बद्ध की।

ऐसे महान आत्मदर्शी संत के स्वर्गवास से हमें अतीव दु:ख हुआ है। दिव्यध्वनि प्रतिष्ठान अंतर्राष्ट्रीय ट्रस्ट ने उनके संबंध में शोक-प्रस्ताव स्वीकार कर शांति की कामना प्रगट की। — **डॉ० कुलभूषण लोखंडे,** अध्यक्ष, दिव्यध्वनि प्रतिष्ठान, **सोलापुर (महा०)**

उनकी जलाई मशाल को द्विगुणित शक्ति से प्रज्वलित करें

आज जबकि भौतिक विज्ञान हमारे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र पर छाता जा रहा है, कोई भी क्षेत्र उससे अछूता नहीं है, सहस्रंश: जनमानस को वीतराग-विज्ञान की ओर उन्मुख कर देना, उनमें आध्यात्मिक चेतना को जागृत कर भौतिक चकाचौंध से संतप्त मानव को शांति-

मंदाकिनी में स्नान करा शीतलता प्रदान करना, उन्मार्ग से उसकी चित्त प्रवृत्तियों को हटा सन्मार्ग की ओर उन्मुख कर देना-स्वामीजी जैसे महान संत का ही कार्य था। खेद है समाज ने उनके जीवन काल में उनकी महत्ता का अंकन नहीं किया; यही नहीं, अपने को उपकृत भी नहीं समझा।

आज जब वे हमारे बीच नहीं हैं, हम सबके कंधों पर यह भार आ पड़ा है कि उनकी जलाई मशाल को द्विगुणित शक्ति से प्रज्वलित करें, उसके प्रकाश को जरा भी कम न होने दें। ऐसे महामानव की आत्मा को उसके महाप्रयाण पर मेरा कोटिशः प्रणाम।

— **पंडित भंवरलाल पोल्याका,** जैनदर्शनाचार्य, **मारोठ (राज०)**

उनके बताये मार्ग पर चलें

चिरस्मरणीय परम उपकारी पूज्य कानजीस्वामी के स्वर्गवास से दिगम्बर जैन समाज को जो क्षति हुई है, वह अपूरणीय है। जीव को स्वभावदृष्टि कराने का अथक प्रयत्न अध्यात्म भाषा में पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी ने लगाकर ४५ वर्ष तक किया। उससे जैन समाज में जो जागृति आई है वह सतत् चालू रहे—इसके लिये हम उनके बताये मार्ग का अनुसरण करें तथा अपने कल्याण के लिये स्वानुभवपूर्वक अग्रसर होते रहें, इस भावनापूर्वक पूज्य गुरुदेवश्री को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

— **मोहनलाल पाटनी, कलकत्ता**

अध्यात्म की जीती-जागती मूर्ति

यों तो जन्म व मरण विकारी आत्माओं का स्वाभाविक परिणमन है, धर्म है, पर्यायगत सत्य है; किंतु कुछ आत्माएँ ऐसी होती हैं कि वे अपना जन्म सार्थक करके जन्म-मरण का अभाव करनेवाले मोक्षमार्ग को पा लेती हैं; पूज्यश्री कानजीस्वामी भी उनमें से एक थे।

मरण अवश्य होगा—ऐसा सभी सांसारिक जीव जानते हैं, मानते हैं, परंतु मरण का निश्चय करके वे कुछ कर्तव्य नहीं करते; इस पर्याय संबंधी ही यत्न करते रहते हैं। पूज्य स्वामीजी इसके अपवाद थे। पर्यायार्थिक उपलब्धियों की ओर दृष्टि न रखते हुये और उनको गौण करते हुये वे निरंतर पारमार्थिक पथ की ओर ही बढ़ते रहे।

आत्मा अनंत शक्तिवान है—उस शक्ति की कोई उपमा लोक में उपलब्ध नहीं है। फिर

भी उस शक्ति का ज्ञान करने के लिये कोई लौकिक उदाहरण ढूंढना चाहें तो वे थे पूज्य स्वामीजी। अपने जीवन में जो कुछ उन्होंने कर दिखाया—वह आत्मा की अनंत शक्ति का परिचायक है। किंतु कोई उस शक्ति को पहिचाने तब न?

भारत क्या है? इसके लिये महात्मा गाँधी की ओर इंगित किया जाता था; उसीप्रकार अध्यात्म क्या है? इसके लिये हम परमश्रद्धेय स्वामीजी की ओर इंगित करें तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। वे अध्यात्म की जीती-जागती मूर्ति थे।

आज हम अपने घर के लोगों को भी रात्रि भोजन करने से, अभक्ष्य-भक्षण आदि से रोक नहीं सकते; देवदर्शन-पूजापाठ आदि के लिये प्रेरित कर नहीं सकते। लेकिन पूज्य स्वामीजी की वाणी में गजब का ओज था—जादू था—आकर्षण था—सम्मोहन था कि लाखों श्वेताम्बर भाई उनके सदुपदेश से दिगम्बर बन गये और मात्र नामधारी दिगम्बर-भाई असली दिगम्बर बन गये। जादू या सम्मोहन कुछ नहीं; यह सब उनकी वस्तुस्वरूप की प्ररूपणा का ही प्रभाव था।

संक्षेप में उनकी जीवनगाथा मात्र इतनी ही है कि प्रारंभ के २३ वर्षों में वे घर में रहे, पर रहे न रहे बराबर। उनका मन घर में कभी लगा ही नहीं—जल में कमल की भाँति रहे। बीच के २२ वर्षों में वे श्वेताम्बर साधु रहे, लेकिन मन में कसमसाहट बनी रही, बाहर से श्वेताम्बर, अंदर से दिगम्बर रहे। अंत के ४५ वर्षों में उनके द्वारा जो अध्यात्म की अविरल ज्ञान-गंगा बहाई गयी—उसकी मिसाल इतिहास में ढूँढ़ने पर भी नहीं मिल सकती।

पूज्य स्वामीजी सूर्य के समान प्रकाशवान थे। उन्होंने स्वयं को तो प्रकाशित किया ही, साथ में सारे जगत को भी प्रकाश दिया। हम उनको क्या श्रद्धांजलि अर्पित करें? फिर भी सूर्य का बहुमान आता है तो उसकी दीपक से आरती उतारने का भाव आता ही है।

वर्तमान युग में तिरोभूत मोक्षमार्ग को आविर्भूत करके पूज्य श्री स्वामीजी ने भव्य जीवों पर अनंत उपकार किया है। हम सब उस मार्ग पर चलें, औरों को चलने के लिये प्रेरित करें; यही पूज्यश्री के प्रति सच्ची श्रद्धांजलि होगी। — **राजमल जैन,** जयपुर प्रिण्टर्स, **जयपुर (राज०)**

निश्चयनय नायक

पिछले चालीस वर्षों में आचार्य कुन्दकुन्द के समयसार का जिस तीव्रता व उत्साह के साथ प्रचार-प्रसार, स्वाध्याय-निदिध्यासन हुआ उसकी प्रत्यक्ष-परोक्ष पृष्ठभूमि में कानजीस्वामी की ज्ञात-अज्ञात प्रेरणा, चेतना सभी के लिये कारण रही।

कानजीस्वामी की धर्म परिवर्तन की घटना को मैं एकदम साधारण नहीं, बल्कि क्रांतिकारी कदम मानता हूँ, यह उनके अपूर्व पुरुषार्थ और साहस का प्रतीक है। उनके अन्य भक्त-सहयोगी भी इस दृष्टि से साधुवाद के पात्र हैं, यह इसलिए कि आज के देश और समाज में ऐसे अनेक विचारक मिलेंगे जो अपने धर्म-संप्रदाय की दुर्बलताएँ जानते हैं, पर इतने पर भी अपने पूर्वजों से प्राप्त धर्म-कूप में मेंढक बनकर जीवन व्यतीत करने में ही अपना अहोभाग्य समझते हैं।

चूँकि कानजीस्वामी की आचार्य कुन्दकुन्द पर अनन्य निष्ठा थी, अतएव उनके लिखे धर्म-ग्रंथों के प्रचार-प्रसार के लिये उन्होंने वह सब कुछ किया-कराया जो वे कर सकते थे, उन्होंने सोनगढ़ में परमागम मंदिर बनवाया, दीवालों पर स्वर्णाक्षरों में दर्शनीय धर्म-ग्रंथ लिखवाये, धर्म-ग्रंथों के अधिकाधिक प्रचार-प्रसार के लिये उन्होंने लागत से भी काफी कम कीमत रखी और धनिकों के माध्यम से अल्पमूल्य या नि:शुल्क ही सहस्त्रों ग्रंथ समाज में वितरित कराये, बढ़िया कागज, नयनाभिराम चित्र, कलात्मक मुद्रण, आकर्षक आवरण पर भी दृष्टि रखी। उन्होंने दिगम्बर जैन विद्वानों और दिगम्बर जैन-पत्रों को भी प्रोत्साहन-प्रश्रय दिया। आत्मधर्म, जो प्रतिमास उनके प्रवचनों को प्रकाशित करता रहा, डॉ० हुकमचंद भारिल्ल जयपुर के संपादन में काफी लोकप्रिय हुआ। लेखन और प्रकाशन में अपूर्व गति-मति आयी। डॉ० भारिल्ल के परीक्षा-योजकत्व में वीतराग-विज्ञान परीक्षालय भी प्रगति से बढ़ा। भगवान महावीर के २५००वें निर्वाण-वर्ष सोनगढ़ से भी धर्मचक्र घूमा। डॉ० हुकमचंद भारिल्ल की भगवान महावीर विषयक कलाकृति पर २५ हजार रुपयों का पुरस्कार देकर समाज के सभी सदस्यों को विस्मय के अंबुधि में डाल दिया और विद्वान ने इस धनराशि को धर्मार्थ देकर उदारता का परिचय दिया। स्वामीजी ने यों 'गुणिषु प्रमोदम्' की बात जैसे समाज को सिखाई वैसे ही विरोधियों के विषय में पूर्णतया मौन रखकर 'माध्यस्थभावं विपरीतवृत्तौ' की शिक्षा भी सभी को अपने जीवन-कार्य से दी।

उन्होंने एक से अधिक स्थानों पर मंदिर बनवाये, पंचकल्याणक—वेदी प्रतिष्ठायें भी करायीं, जिनमें संहितासूरि पंडित नाथूलालजी इंदौर का अतीव योगदान रहा। पूजन के साथ उन्होंने भक्ति को जोड़ा अवश्य था, परंतु उनकी दृष्टि स्वाध्याय पर ही सर्वाधिक केंद्रित रही। सुनिश्चित समय पर स्वाध्याय का श्रीगणेश और इतिश्री करना तथा एक निश्चित भाषा-शैली का प्रयोग करना उनकी अप्रतिम विद्वता, असाधारण, कार्यक्षमता का परिचायक है। प्रशिक्षण की परंपरा डालकर उन्होंने अपने मनोनुकूल विद्वानों को भी जन्म और जीवन दिया।

नैरोबी में दिगम्बर जैन मंदिर की प्रतिष्ठा के समय जैसे नई दुनियाँ के उज्जैन स्थित संवाददाता ने भ्रम में उन्हें दिगम्बर जैन मुनि लिख दिया था वैसे उनकी मृत्यु के प्रसंग में एक समाचार सेवा समिति ने उन्हें दिगम्बर जैन मुनि लिख दिया था। प्रथम समाचार का प्रतिवाद तो आत्मधर्म के संपादक ने नई दुनियाँ में प्रकाशित करा दिया था, संभव है द्वितीय समाचार का भी समुचित प्रतिवाद नवभारत टाइम्स, बम्बई में छपा हो और मैं वह अंक नहीं देख सका होऊँ। कानजीस्वामी दिगम्बर जैन मुनि नहीं थे, वे गृहस्थ होकर भी अतीव आध्यात्मिक विचारधारा लिये थे। यदि वे वस्तुत: दिगम्बर जैन मुनि हो पाते तो समयसार सजीव होता और वे चलते-फिरते सिद्धसदृश सद्गुरु होते, व्यवहार के निश्चय में खोने की बात भी बनती। पर जैसे सर सेठ हुकमचंद दिगम्बर जैन मुनि नहीं बन सके वैसे कानजीस्वामी भी दिगम्बर जैन मुनि नहीं बन सके। बन पाते तो विद्वत्ता और चारित्र का अभूतपूर्व संगम होता और उनके निकट भव में तीर्थंकर होने की संभावनायें भी अंकुरित-पल्लवित होतीं। अस्तु: वे जहाँ कहीं भी हों, शुद्ध आत्मिक शांति को प्राप्त करने में सक्षम हों, हम सभी की श्रद्धा-सुमन अंजलियाँ स्वीकार करें। उनके निधन से आध्यात्मिक जगत की अपूरणीय, अविस्मरणीय क्षति हुई है। आत्म-स्वातंत्र्य और आत्मा की अभिव्यक्ति के लिये आज के युग में उनका अपूर्व वैचारिक योगदान रहा।

— लक्ष्मीचंद्र 'सरोज' एम.ए., **जावरा (म०प्र०)**

ज्योतिर्मय स्तंभ

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी आध्यात्मिक क्रांतिकारी संत थे। परिस्थितियों और साधनों में परिवर्तन मात्र ही क्रांति नहीं, अपितु मान्यता और विश्वासों में परिवर्तन का नाम वास्तविक क्रांति है। स्वामीजी को परमपूज्य भगवान कुन्दकुन्द का आध्यात्मिक ग्रंथ समयसार मिला और वे उसके एकनिष्ठ स्वाध्यायी बन गये। समय का सार उनकी समझ में आ गया, नवीन आत्मानुभूति हुई। समयसार ने उनकी धर्मसंबंधी पूर्व मान्यताओं और विश्वासों को झकझोर दिया और उनके जीवन में वास्तविक क्रांति का सहज प्रादुर्भाव हुआ। समाज में जीवनदायिनी स्वाध्याय परिपाठी को पुनर्स्थापित करने का श्रेय पूज्य स्वामीजी को ही है। वे जैनधर्म और दर्शन के ज्योतिर्मय स्तंभ थे, स्वप्रकाशित दीप थे। मैं उनके चरणों में अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ। — **मिश्रीलाल गंगवाल, इंदौर (म०प्र०)**

अज्ञान-तिमिरनाशक सूर्य

पूज्य कानजीस्वामी के दिगम्बर होने से पूर्व समाज में धर्म के प्रति शिथिलता उत्पन्न हो गई थी, धर्म की चर्चा प्रायः समाप्त होती जा रही थी और वास्तविकता को समझने-समझाने को कोई तैयार नहीं था; उनके अवतरण से समाज में अज्ञान को समाप्त करने के लिये सूर्य का उदय हुआ, स्वाध्याय की ओर विशेष आकर्षण पैदा हुआ तथा मिथ्यात्व क्या है ? इसकी जानकारी समाज को हुई। उनकी जलाई हुई मशाल निरंतर जलती रहे इसी कामना के साथ श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ। — **हुकमचंद जैनी,** मंत्री, भा० दिगम्बर जैन परिषद, **सरधना (उ०प्र०)**

अध्यात्म-युग का सूर्य अस्त हो गया

ज्यों ही अकस्मात् विद्युत के वेग की भाँति यह समाचार पढ़ने को मिला कि स्वामीजी का निधन बम्बई में हो गया, त्यों ही आँखों के सामने अंधकार छा गया, क्षणभर के लिये मन और इंद्रियाँ शून्य हो गईं।

संपूर्ण जैन समाज में स्वामीजी का उदय एक सहज घटना के रूप में हुआ था। उदयरूप में न तो वे किसी आलोक से स्पर्शित होकर आये थे और न तब तक उन्होंने आलोक का कोई महत्त्व ही समझा था। परंतु प्रकाश का स्पर्श पाते ही उन्होंने समस्त उपाधियों का त्याग कर 'सर्वदा ज्ञानमेकं' होकर रहने का अभ्यास किया। यही उनकी जीवन-साधना थी और इसी में उनका वह व्यक्तित्व निहित रहा है जिसके जानने-समझनेवाले विरले ही रहे हैं।

समयसार, प्रवचनसार, नियमसार, मोक्षमार्गप्रकाशक आदि आध्यात्मिक जिन ग्रंथों को पहले कोई उठाकर भी नहीं देखता था, हमारे गुरुजनों ने भी जिनका कभी वाचन नहीं किया था, आद्योपांत कभी पढ़ा नहीं था; आज उनका स्वाध्याय होने लगा है, जो स्वामीजी की देन है। आज जैन समाज के छोटे-बड़े सभी गाँवों में, बड़े-बड़े स्वाध्याय-केंद्रों में तथा त्यागी, साधु-संतों के स्वाध्याय में 'समयसार' पर प्रवचन होने लगे हैं। जो यह कहते हैं कि 'समयसार' साधुओं के लिये है, वे ही रुचि के साथ गृहस्थों को पढ़कर सुनाते हैं, प्रवचन करते हैं, निश्चय-व्यवहारनय घटित करते हैं। पहले जहाँ कहीं स्वाध्याय नहीं होता था, लोगों में स्वाध्याय के प्रति अरुचि तथा उपेक्षा का भाव था, वहीं स्वामीजी ने आबाल-वृद्धों में ऐसी जिज्ञासाओं तथा सुरुचियों को जन्म दिया, जिससे सहज ही लोग धर्म की वास्तविकता को जानने-समझने के लिये अध्यात्म जैसे दुरूह व रूखे-सूखे विषय की ओर श्रद्धापूर्वक झुकते चले गये और ऐसे स्वाध्याय सुरुचिसंपन्न बन गये कि उनको जैसा रस अब स्वाध्याय में आता है, वैसी सरसता कहीं नहीं दिखलाई पड़ती। इस स्वाध्याय की प्रवृत्ति का ही विकास स्वामीजी ने नहीं किया; नियमतः दोनों वक्त ठीक समय पर स्थान-स्थान पर स्वाध्याय होने लगा है; वरन लोगों में आत्मविश्वास भी जागृत किया है। जैन समाज में आत्मचैतन्य की जागृति का कार्य इतने बड़े पैमाने पर सामूहिक रूप में मेरी जानकारी में पहले कभी नहीं हो पाया। अतः यह समस्त श्रेय स्वामीजी को है।

स्वामीजी ने किसी पंथ, मत या गद्दी को जन्म नहीं दिया। वे यदि चाहते, तो पंथ-

प्रवर्तक बन सकते थे। किंतु वे स्वयं न किसी पद पर रहे और न कभी किसी को पद पर रहने के लिए प्रेरित किया। उनकी एक ही भावना व प्रवृत्ति लक्षित हुई कि वे आत्महित व कल्याण करना चाहते थे, उनके सामने बहुत बड़ी मंजिल रही है, शायद जिसे हम अभी तक न पहचान पाये हों, वे उसी पर बढ़ने के लिये नित-प्रति, स्वाध्याय-चिंतन-मनन में ही रत रहे। लगभग साठ वर्षों के दीर्घ काल में वे अनवच्छिन्न रूप से आत्मचिंतन करते रहे। उनको जो प्रकाश अध्यात्म के आलोक में प्राप्त हुआ, वैसा संत अवस्था में रहकर अनुभूति नहीं हुआ था। संभवत: इसीलिए श्वेताम्बर साधु के वेश को छोड़कर स्वेच्छा से उन्होंने दिगम्बर मत अंगीकार किया।

यद्यपि निकट संपर्क की दृष्टि से मैं स्वामीजी से बहुत दूर रहा हूँ, किंतु भावों में उनके अधिक निकट रहा हूँ। क्योंकि मैं यह मानता हूँ कि मेरी आस्था को बलवती बनाने में उनकी मनीषा का अपरोक्ष योग रहा है। इसमें कोई संदेह नहीं है कि लाखों लोगों की मान्यता उनके विचारों से परिवर्तित हुई है। जैनधर्म के प्रति लोगों में दृढ़ विश्वास उत्पन्न करने में उनका बहुत बड़ा योगदान रहा है, जिसे युग-युगों तक किसी भी प्रकार भुलाया नहीं जा सकता।

जैन समाज के इतिहास में विगत तीन दशकों में अध्यात्म की एक ऐसी प्रशांत लहर स्पन्दित हुई, जिसके स्पंदन से आत्मचेतना विकसित हो गई। अत: इसे अध्यात्म-युग से ही जाना-माना जायेगा। स्वामीजी अध्यात्म-चेतना को ऊर्जस्वित करनेवाले उस भास्कर की भाँति थे जो सदा आलोक प्रवाहित करते रहे। किसप्रकार आत्मज्ञान की ऊर्जस्वित धारा को पाकर वे अध्यात्म के प्रखर सूर्य की भाँति तेजस्विता से दिग्‌दिगन्तों में व्याप्त रहे—यही उनकी प्रमुख जीवन गाथा है। यह हम अपनी भाषा में कहते हैं कि उन्होंने सब कुछ सहा, पर सदा मुस्कराते रहे, ज्ञान-रश्मियों को विकीर्ण करते रहे।

आज लोग उनके उत्तराधिकारी व गद्दी की बात करते हैं। किंतु वे भूल जाते हैं कि स्वामीजी ने कभी कुछ लिखा नहीं, किसी नई विचारधारा को जन्म नहीं दिया, किसी लोकविरुद्ध प्रवृत्ति को प्रचलित नहीं किया; वे तो सदा मूल ग्रंथों को वाँचते रहे, उनकी व्याख्या करते रहे और यह बता गये कि इन आध्यात्मिक ग्रंथों की व्याख्या व भाष्य किस प्रकार से किया जाता है ? इसमें उनकी कोई लौकिक कामना नहीं थी। वे तो स्वयं अध्ययन करते थे और जीवन के अंत तक बराबर करते रहे। उस अध्ययन से जो भाव उत्पन्न होते थे, उनको सहजरूप

से लोगों के सामने प्रकट कर देते थे। इसीप्रकार से जो लोग उनसे प्रश्न पूछते थे, उनका सप्रमाण उत्तर देते थे। उनके उत्तर इतने अध्ययनपूर्ण व मननयोग्य होते थे कि लोग विस्मरण के भय से उनको टेपरिकार्ड में भरकर सुरक्षित रखने लगे। फिर, यही क्रम प्रवचनों के विषय में लागू हो गया। अतएव स्वामीजी के नाम पर जो साहित्य मिलता है, वह सब उनके सान्निध्य में रहनेवाले भक्तों के द्वारा प्रवचनों के माध्यम से संकलित व प्रकाशित हुआ है। उसमें स्वामीजी की अपनी कोई वांछा नहीं रही।

स्वामीजी सरलता और निश्छलता के प्रतीक थे। जो बात जैसी होती, उसे बिना किसी संकोच के सहज निश्छल भाव से प्रकट करते हुए उनको देखा। यद्यपि मैं कभी सोनगढ़ नहीं गया, न कभी सोनगढ़ के विद्वानों के साथ बैठकर स्वामीजी के संबंध में चर्चा ही की। एकबार उदयपुर में जब स्वामीजी पधारे थे, तभी प्रत्यक्ष रूप से चर्चा हुई थी। साहित्य में तो उनको पहले से ही झांककर नजदीकी से देख चुका था, किंतु व्यक्तिगत संपर्क जो हुआ, वह अविस्मरणीय है। आज भी उनके शब्द मेरे कानों में गूँजते रहते हैं—''आ बात दिगम्बरमतमां छे, आ क्याइं नथी'' अर्थात् अध्यात्म जैसा दिगम्बर जैनमत में प्रतिपादित है, वैसा संसार के किसी भी मत में नहीं है। तभी मैंने प्रश्न किया था—और श्वेताम्बर मत में..... सरस, स्निग्ध वाणी में उत्तर देते हुए उन्होंने कहा था—''आ बात त्याँ नथी''—अध्यात्म का यह रस वहाँ नहीं है। मैंने बात बढ़ाते हुए आगे कहा था—आपने आगम-ग्रंथों को तो वाँचा होगा..... वे बोले थे—''साठ बार आगम-ग्रंथों का वाचन कर चुके; कल्पसूत्र का वाचन तो अनेक बार किया, पर सब मिलावट है, मिलावट..... आ शुद्ध खरी बात दिगम्बरमतमां छे, त्याँ चर्चा नथी।''

भले ही आज हम किसी स्वार्थ या पक्षपात के कारण स्वामीजी को अपनी श्रद्धा का आलंबन न बना पाए हों, किंतु हमारा विश्वास है कि आनेवाली पीढ़ियाँ इस महापुरुष की ग्रंथहीन चेतना को पहचानकर यह महसूस करेगी कि वास्तव में सद्गुरुदेव श्री स्वामीजी के कारण एक ऐसे युग का सृजन हुआ जिसमें आध्यात्मिक क्रांति ने जन्म लिया और जो सच्चे सुख को पाने के लिये सही दिशा व निर्माण की आत्मोदय चेतना को प्रतिफलित करनेवाली है। वर्तमान और भविष्य इस इतिहास को दुहरायेगा कि युग के तूफानों में आंधी तथा झंझावातों में सदा आलोकित होनेवाला एक ऐसा स्पंदनशील प्रदीप प्रज्वलित रहा, जिसकी दीप-शिखा

निष्कंप थी, जो देखने में ज्ञान-प्रदीप था, पर किसी सूरज से कम नहीं था; क्योंकि अंधकार व कज्जल की तिमिर सघनता को सहज भाव से स्वीकार कर आत्मसात् कर उन्होंने उस ज्ञान के आलोक को प्रदान किया, वह प्रकाश विकीर्ण किया जो आज, और भविष्य में भी, अध्यात्म-युग के सूर्यास्त होने के पश्चात् भी रोशनी के रूप में सहा बना रहेगा। उस रोशनी के प्रकाश में हम अपने आप को देखें, पहचानें व अनुभव प्राप्त करें—यह स्वीकार करना, मानना ही स्वामीजी को सच्ची श्रद्धांजलि देना होगा। — डॉ० देवेन्द्रकुमार शास्त्री, नीमच (म०प्र०)

स्वामीजी अपना नाम अमर कर गये

पूज्य कानजीस्वामी के निधन के समाचार सुनकर अत्यंत दु:ख हुआ, मूर्छा-सी आ गई।

पूज्य स्वामीजी के निधन से समाज को जो धार्मिक क्षति हुई है, उसकी पूर्ति होना असंभव-सा है। स्वामीजी के वियोग का दु:ख तो जो विरोधी थे, उनको भी हुआ है।

वर्तमान युग में स्वामीजी ने दो हजार वर्ष बाद पूज्य आचार्य कुन्दकुन्ददेव के मूल सिद्धांतों का अनेक बाधाऐं सहन करते हुए भी जैन-जैनेतरों में शंखनाद किया है; उनकी वाणी का देश-विदेश में प्रचार कर जैनधर्म की ध्वजा फैलाई है। लाखों की संख्या में जैन धर्मानुयायी बनाने का श्रेय यदि किसी को है, तो वह है पूज्य कानजीस्वामी को। अनेक विघ्नों को निडरतापूर्वक सहन करते हुए उन्होंने समयसारादि ग्रंथों का प्रचलन जनमानस में किया तथा सोती हुई जैन समाज को जगाकर उन्हें धर्म के प्रति उन्मुख किया है। धर्म के उत्थान के लिये, कुन्दकुन्दस्वामी के प्रवर्तकों में स्वामीजी अपना नाम अमर कर गये, इसके लिये समाज सदैव उनका ऋणी रहेगा।

मुझे विश्वास है कि जो धार्मिक कार्य स्वामीजी के समय में होते थे, आत्मार्थी धर्मलाभ लेकर अपने को कृतार्थ मानते थे; वे ही कार्य आप सबके माध्यम से सोनगढ़ में होंगे ताकि समाज को उनका वियोग भासित न हो। स्वामीजी के माध्यम से आचार्य कुन्दकुन्द की वाणी को समाज में सूर्य की तरह प्रकाश में लावें तथा स्वामीजी द्वारा सींचा हुआ धर्मरूपी वृक्ष आप सबके माध्यम से सदैव प्रकाशमान होता हुआ फलता-फूलता रहे।

— पं० चुन्नीलाल शास्त्री, शहडोल (म०प्र०)

जिनका इतिहास में कोई सानी नहीं

आध्यात्मिक प्रवक्ता सत्पुरुष पूज्य कानजीस्वामी के निधन से मुझे ही नहीं समाज के सभी सदस्यों को दु:ख हुआ है। विगत ४० वर्षों से वे समाज के सर्वाधिक बहुचर्चित व्यक्ति रहे। समाज छोटा हो अथवा बड़ा, गाँव में हो या नगर में, गृहस्थ हो अथवा साधु, सभी पूज्य कानजी स्वामीजी की चर्चा करते रहते थे। उन्होंने अपने जीवन में अनेक महान कार्य किये हैं, लोगों के जीवन में स्वाध्याय का प्रकाश भरा है, आत्मा-परमात्मा के संबंध में चिंतन करने की प्रेरणा दी है, स्व-पर भेदविज्ञान करने एवं आत्महित करने का उपदेश दिया। है ये सब वे अभिनंदनीय कार्य हैं जिनका इतिहास में कोई सानी नहीं है।

पूज्य कानजीस्वामी व्यक्ति नहीं, संस्थाओं के पुंज थे। लक्ष्य उनके आगे-पीछे घूमता था तथा उनका संकेत मिलते ही रुपयों का ढ़ेर लग जाता था। यही कारण है कि आज सारे देश में नये-नये मंदिरों का निर्माण हो चुका है तथा पंडित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जैसी कितनी ही संस्थाएँ खड़ी हो चुकी हैं।

स्वामीजी से मेरा निकट का संपर्क रहा। स्वामीजी का अधिकांश समय सोनगढ़ में ही व्यतीत होता था और वहीं से सारे देश को अध्यात्म-संदेश सुनाते रहते थे। समय के वे पूर्ण पाबंद थे। सर्दी, गर्मी एवं वर्षा की परवाह किये बिना उनके सभी कार्यक्रम समय पर होते थे तथा श्रोतागण भी समय के पूर्व ही पहुँच जाते थे। चौबीस घंटे अध्यात्म की चर्चा करनेवाले वे सारे देश में अकेले व्यक्ति थे। सोनगढ़ आज स्वामीजी के कारण ही तीर्थ बन चुका है, जहाँ यात्री जाकर कुछ देर के लिये आत्मचिंतन में लग जाता है।

गत २०० वर्षों में स्वामीजी जैसा चर्चित व्यक्ति समाज में नहीं हुआ, जिसने समाज को इतना झकझोरा हो तथा केवल आत्मा ही आत्मा की बात की हो। वास्तव में स्वामीजी के निधन से समाज ने ऐसा संत खो दिया है जिसकी पूर्ति निकट भविष्य में क्या सैकड़ों वर्षों में भी होना संभव नहीं है। मैं स्वामीजी के प्रति अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि समर्पित करता हूँ।

— **डॉ० कस्तूरचंद कासलीवाल,** निदेशक, श्री महावीर ग्रंथ अकादमी, **जयपुर (राज०)**

वे अजर-अमर हैं

बीसवीं शताब्दी के महान जैन आध्यात्मिक संत श्री कानजीस्वामी के निधन का समाचार पाकर हार्दिक दु:ख हुआ, किंतु आत्मा तो अजर-अमर है।

स्वामीजी के अभीष्ट दृढ़ ज्ञान उपयोग और वात्सल्य आदि भावों की विशिष्ट सुगंधि अखिल विश्व में सदैव रहेगी और उनकी आत्मा पवित्र वीतराग भाव से अपने अभीष्ट को सिद्ध करेगी।

— **ब्र० विमला जैन,** साहित्याचार्य, **बाँदा (उ०प्र०)**

दिव्यध्वनि जैसा गुंजार कहा मिलेगा ?

हे गुरुदेव ! आपका वियोग असह्य है। आपका दिव्यध्वनि जैसा गुँजार और भवनाशिनी प्रेरणा अब कहाँ मिलेगी ? आपका मुझ पर अनंत उपकार है। आप अमर हैं। आपकी वाणी अमर है। आपका सत्यतर्व-प्ररूपक अध्यात्मसंदेश, आपके द्वारा बताया हुआ आत्मधर्म अमर रहेगा।

— **कन्हैयालाल (कन्नभाई), दाहोद (गुजरात)**

जयपुर में पंडित श्री लालचंदभाई मोदी के आध्यात्मिक प्रवचनों का आयोजन

जयपुर - श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के कार्यक्रमों के अंतर्गत दिनांक १ फरवरी से १० फरवरी, १९८१ तक १० दिन के लिये श्री टोडरमल स्मारक भवन में सुप्रसिद्ध अनुभवी विद्वान एवं आध्यात्मिक प्रवक्ता श्री लालचंदभाई अमरचंद मोदी बम्बई के आध्यात्मिक प्रवचनों का आयोजन किया गया है। इस अवसर पर पंडित ज्ञानचंदजी एवं पंडित केशरीचंदजी 'धवल' भी पधार रहे हैं। डॉ० हुकमचंदजी भारिल्ल उन दिनों यहीं रहेंगे। उनके आध्यात्मिक प्रवचनों का भी लाभ प्राप्त होगा।

बाहर से पधारनेवाले महानुभावों के लिये नि:शुल्क आवास एवं सशुल्क भोजन की व्यवस्था है। बाहर से पधारनेवाले महानुभाव तत्काल सूचित करें जिससे उनके ठहरने आदि की समुचित व्यवस्था की जा सके। विगत वर्षों में श्री लालचंदभाई को सुनने बहुत लोग पधारते रहे हैं, इस वर्ष भी बहुत लोगों के पधारने की संभावना है। अत: बिना सूचना के अचानक आनेवालों को ठहराने में हमें तो कठिनाई होगी ही, आनेवालों को भी असुविधा होगी। अत: आनेवाले भाई-बहन पूर्व सूचित करने का अवश्य कष्ट करें ताकि पहले से ही समुचित व्यवस्था की जा सके।

स्थानीय लोगों के लिये भी रात्रि-विश्राम की व्यवस्था की जावेगी, जिससे शहर से आनेवाले सायंकालीन एवं प्रात:कालीन दोनों प्रवचनों का लाभ उठा सकें।

— **मंत्री, पंडित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट**

पुस्तकें जो छपकर तैयार हैं

पुनः प्रकाशन (हिन्दी)

मोक्षमार्गप्रकाशक : ७ रु० **तीर्थंकर भगवान महावीर** : ५० पैसे

युगपुरुष कानजीस्वामी : २ रु० **मैं कौन हूँ ?** : १ रु० २५ पैसे

धर्म के दशलक्षण : सादी ४ रु० ● सजिल्द ५ रु० ● प्लास्टिक सहित ६ रु०

वीतरागी व्यक्तित्व : भगवान महावीर : २५ पैसे

नये प्रकाशन

तीर्थंकर महावीर और उनका सर्वोदय तीर्थ (अंग्रेजी) : १५ रु० ● **अनित्य भावना** (हिन्दी) : १ रु०

इन्टरव्यूज : पूज्य गुरुदेवश्री कानजी स्वामी से (हिन्दी) : १ रु०

सिद्धचक्र विधान (हिन्दी) : १० रु० ● **वीर हिमाचल तैं निकसी** (हिन्दी) : ७५ पैसे

धर्म के दशलक्षण	: मराठी, कन्नड़, तमिल, अंग्रेजी	● **अर्चना**	: कन्नड़
सत्य की खोज	: मराठी, कन्नड़, तमिल, गुजराती	● **छहढाला**	: मराठी, कन्नड़
क्रमबद्धपर्याय	: मराठी, कन्नड़, तमिल	● **अहिंसा परमोधर्म**	: कन्नड़, तमिल
मैं कौन हूँ ?	: मराठी, कन्नड़, तमिल	● **लघु जैनसिद्धांत प्रवेशिका**	: कन्नड़, तमिल
युगपुरुष कानजीस्वामी	: मराठी, कन्नड़, तमिल	● **मोक्षमार्गप्रकाशक**	: कन्नड़
तीर्थंकर भगवान महावीर	: मराठी, कन्नड़, तमिल	● **अनेकांत और स्याद्वाद**	: कन्नड़
श्रावकधर्मप्रकाश	: मराठी, कन्नड़, तमिल	● **गोम्मटेश्वर बाहुबली** (चित्रकथा)	: हिन्दी
मुक्ति का मार्ग	: मराठी, कन्नड़, तमिल		
जैन बालपोथी भाग	: कन्नड़	● **जैन बालपोथी भाग २**	: कन्नड़

समाचार दर्शन

सोनगढ़ में सिद्धचक्र विधान सानंद संपन्न

सोनगढ़ - पूज्य गुरुदेवश्री कानजी स्वामी की पावन स्मृति में दिनांक १५-१२-८० से १-१-८१ तक सिद्धचक्र मंडल विधान महोत्सव विशाल पैमाने पर हुआ। इस अवसर पर सिद्धचक्र विधान की इक्कीस सौ प्रतियाँ छपाई गयी थीं। सिद्धचक्र पाठ के अवसर पर प्रत्येक पुजारी के ही नहीं, अपितु दर्शक के हाथ में भी पुस्तक रहती थी।

हजारों भाई-बहिन बाहर से पधारे थे। प्रतिदिन डॉ० हुकमचंदजी भारिल्ल जयमाला का अर्थ करते थे, जिसे सभी लोग मंत्रमुग्ध होकर सुनते थे। सायंकाल ७.१५ से ८.१५ तक पंडित ज्ञानचंदजी की छहढाला पर कक्षा लगती थी तथा उसके बाद ८.३० से ९.३० तक डॉ० हुकमचंदजी भारिल्ल का समयसार पर मार्मिक प्रवचन होता था। दोपहर में २.३० से ३.३० तक प्रतिदिन प्रवचन होते थे, जिन में ब्रह्मचारी चन्दूभाई, पंडित श्री लालचंदभाई एवं युगलजी के प्रवचन हुए। प्रतिदिन सायंकाल भक्ति का कार्यक्रम भी चलता था।

आरंभ के दिनों में पूजन के बाद गुरुदेवश्री के टेप चलते थे। प्रथम व अंत के दिन तथा २८-१२-८० (गुरुदेवश्री की मासिक पुण्यतिथि के दिन) को विशाल रथयात्रायें निकाली गईं।

इसी अवसर पर १५ लाख रुपये की लागत से नवनिर्मित विश्रांति भवन का उद्घाटन नैरोबी निवासी श्री लक्ष्मीचंदभाई एवं श्री रायचंदभाई के कर-कमलों द्वारा संपन्न हुआ। इसके बाद भी श्री लालचंदभाई एवं युगलजी ५ जनवरी तक वहाँ रुके और उनके प्रवचन दोनों समय प्रतिदिन होते रहे।

इंदौर पंचकल्याणक सानंद संपन्न

इंदौर (म०प्र०) - दिनांक १८-१-८१ से २५-१-८१ तक श्री पंचमेरू नंदीश्वरद्वीप जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव विभिन्न आयोजनों के साथ सानंद संपन्न हुआ। इंदौर में यह पंचकल्याणक चालीस वर्ष बाद हुआ था, अतः वहाँ की जनता ने इसका भरपूर लाभ लिया। प्रत्येक कार्यक्रम में ही नहीं, प्रतिदिन होनेवाले तीन-तीन प्रवचनों में तीस हजार के लगभग जनता उपस्थित रहती थी। प्रतिष्ठा-विधि का कार्य पंडित धन्नालालजी ग्वालियर तथा उनके सहयोगी ब्रह्मचारी परशुरामजी, पंडित रतनलालजी, ब्रह्मचारी अभिनंदनकुमारजी शास्त्री ब्रह्मचारी श्रीचंदजी, ब्रह्मचारी जतीशचंदजी शास्त्री, ब्रह्मचारी झम्मकलालजी, श्री छगनलालजी तथा श्री जवाहरलालजी ने संपन्न कराया। इस अवसर पर पंडित बाबूभाई मेहता

के समयसार पर एवं डॉ० हुकमचंदजी भारिल्ल के पंचकल्याणक प्रसंगों पर मार्मिक प्रवचन हुए। पंडित ज्ञानचंदजी विदिशा, पंडित केशरीचंदजी 'धवल' आदि विद्वानों के अतिरिक्त स्थानीय विद्वान पं० नाथूलालजी शास्त्री के भी प्रवचन हुए।

श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन भजन मंडली घाटकोपर, बम्बई द्वारा एकांकियों का प्रदर्शन एवं भजनों के कार्यक्रम तथा स्थानीय निकलंक मंडल द्वारा महामस्तकाभिषेक नृत्य-नाटिका, अकलंक मंडल द्वारा सती अंजना नृत्य-नाटिका प्रस्तुत की गयी। भक्ति के कार्य में पंडित कन्नूभाई दाहोद का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। इस पंच कल्याणक में २१६ जिनबिम्बों की प्रतिष्ठा हुई तथा कुल ५.२५ लाख रुपयों की आय हुई। आत्मधर्म एवं जैनपथ-प्रदर्शक के अनेक ग्राहक बने तथा १५ हजार रुपये का सत्साहित्य बिका।

यह प्रतिष्ठा मातेश्वरी चन्दाबाई सेठी, ब्र० मानूबाई एवं ब्र० परशुरामजी के अथक् प्रयासों का फल है। स्थानीय कार्यकर्ताओं एवं स्वयंसेवकों का काम भी सराहनीय था। प्रत्येक कार्यक्रम का नियत समय पर होना एवं विद्वानों के प्रवचनों का आकर्षण इस पंच कल्याणक की प्रमुख विशेषता रही है।

सोनगढ़ के निर्देशन में, किंतु गुरुदेवश्री कानजीस्वामी की अनुपस्थिति में, यह प्रथम पंच कल्याणक प्रतिष्ठा थी—जिसकी सफलता को देखकर लोग आश्चर्यचकित रह गये और लोगों में यह भावना जगी कि गुरुदेवश्री द्वारा बताये मार्ग की प्रभावना उसी वेग से चलती रहेगी—जिस वेग से उनके सद्भाव में चलती थी।

श्री कुन्दकुन्द कहान दि० जैन तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट को योगदान

दिनांक ९-१-८१ से १८-१-८१ तक पंडित ज्ञानचंदजी विदिशावाले—गोहद, मो, गोरमी, भिण्ड तथा ग्वालियर पधारे। सभी स्थानों पर तीनों समय आपके तात्त्विक प्रवचन हुए, जिससे समाज लाभान्वित हुई। श्री कुन्दकुन्द कहान तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट को इस अवसर पर ३८,४०६ रुपये की राशि नगद प्राप्त हुई। सभी ने तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट द्वारा किये जा रहे कार्यों की सराहना की।

दिनांक ११-१-८१ से १९-१-८१ तक पंडित लालजीरामजी का बीना, मंडीबामौरा तथा झांसी पदार्पण हुआ। सभी जगह समाज ने आपके प्रवचनों से लाभ लिया। इस अवसर पर श्री कुन्दकुन्द कहान तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट को ७२५२.०० (सात हजार दो सौ बावन) रुपए की राशि नगद प्राप्त हुई।

— माणिकलाल आर० गाँधी

जिनमंदिर व स्वाध्याय-भवन का शिलान्यास संपन्न

प्रतापगढ़ (राज०) :- पूज्य कानजीस्वामी के सदुपदेशों से प्रभावित होकर स्थानीय मुमुक्षु मंडल ने सीमंधरस्वामी जिनमंदिर एवं स्वाध्याय-भवन निर्मित कराने का संकल्प किया था। फलस्वरूप दिनांक १०-१२-८० को पंडित हिम्मतभाई जोबालिया की अध्यक्षता में शिलान्यास-समारोह संपन्न हुआ। शिलान्यास नैरोबी निवासी सेठ बेलजीभाई शाह, श्री रश्मिकांत शाह, श्री रमेशभाई तथा निशाबहन और कुसुमबहन ने किया। इस अवसर पर दिगम्बर जैन मुमुक्षु मंडल नैरोबी की ओर से १५००० रुपए की दान की घोषणा की गई। समाज के अन्य लोगों से भी लगभग १५००० रुपए की घोषणायें हुईं। — **सज्जनलाल जैन**

महाराष्ट्र में युवा फैडरेशन की शाखायें गठित

शिरपुर :- दिनांक २१-११-८० को श्री धरमचंदजी बेलोकर की अध्यक्षता में युवा फैडरेशन की शाखा गठित की गई। अध्यक्ष श्री जयकुमारजी बेलोकर तथा सचिव श्री गजेन्द्र ढोले चुने गए।

शिरड़शहापुर - श्री बाबूसाब आहले पुसद की अध्यक्षता तथा पंडित धन्नालालजी ग्वालियर के मुख्य आतिथ्य में श्री निरंजन कलमकर द्वारा युवा फैडरेशन का उद्घाटन १४ दिसम्बर १९८० को किया गया। अध्यक्ष श्री नितिन यंबल एवं सचिव श्री दिलीप यंबल चुने गये। यहाँ महिला प्रकोष्ठ भी कायम किया गया, जिसकी अध्यक्षा श्रीमती चंदन यंबल तथा सचिव सौ० छाया महाजन चुनी गयीं।

बसमतनगर - दिनांक २१-१२-८० को श्री फूलचंदजी मुक्किरवार द्वारा यहाँ युवा फैडरेशन की नवीन शाखा का उद्घाटन किया गया। आपने संपूर्ण महाराष्ट्र प्रांत में फैडरेशन की शाखाऐं गठित करने का बीड़ा उठाया है। कार्यकारिणी में श्री महेंद्रकुमार यंबल अध्यक्ष एवं श्री सत्यविजय अन्विकर सचिव चुने गए। — **प्रकाश के० परतवार**

भोपाल (म०प्र०) - २८ दिसम्बर १९८० को जनमंगल महाकलश का पदार्पण हुआ। म०प्र० के मुख्यमंत्री श्री अर्जुनसिंहजी तथा डॉ० शंकरदयालजी शर्मा एम.पी. ने अगवानी की। इस अवसर पर युवा फैडरेशन की स्थानीय शाखा ने सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये। लगभग साढ़े ग्यारह हजार की बोलियाँ ली गईं। — **डालचंद जैन**

एटा (उ०प्र०) - आध्यात्मिक क्रांति के जनक पूज्य कानजीस्वामी के देहावसान पर श्री शांतिस्वरूपजी जैन एडवोकेट की अध्यक्षता में शोक-सभा हुई। जिसमें समाज ने स्वामीजी के प्रति भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की। — **अजितप्रसाद जैन**

आगरा (उ०प्र०) - अखिल विश्व जैन मिशन तथा दि० जैन महासमिति आगरा के संयुक्त तत्त्वावधान में शोक-सभा आयोजित की गई जिसमें डॉ० गिरीशचंदजी कोटिया, पंडित राजारामजी, श्री रामगोपालजी, श्री सुनहरीलालजी तथा श्री रोशनलालजी आदि ने अपनी भावनायें व्यक्त करते हुए श्रद्धांजलियाँ अर्पित कीं। सभा का संचालन ब्र० राजकुमारजी पाटनी ने किया।

— **वीरेन्द्रकुमार जैन**

भिण्ड (म०प्र०) - पूज्य कानजीस्वामी के स्वर्गवास के समाचार प्राप्त होते ही समाज में शोक की लहर दौड़ गयी। सभी कारोबार बंद कर स्थानीय परेड मंदिर में शोक-सभा हुई जिसमें अनेक विद्वानों एवं प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने शोक-संतप्त हृदय से उद्‌गार व्यक्त करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की।

जबेरा (म०प्र) - पूज्य गुरुदेवश्री के निधन के समाचार सुनते ही समाज ने अपना कारोबार बंद कर दिया। रात्रि में शोक-संतप्त समाज ने स्वामीजी के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की।

— **उदयकुमार जैन**

कुचामन सिटी (राज०) - दिनांक ३०-११-८० को मुनि श्री विजयसारगजी के सान्निध्य में वृहत् शोक-सभा हुई जिसमें डॉ० देवेन्द्रकुमारजी शास्त्री, नीमच तथा स्थानीय विद्वान् पंडित विद्याकुमारजी सेठी ने पूज्य स्वामीजी के प्रति उद्‌गार प्रगट करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की।

— **अजितप्रसाद काला**

फतेहपुर (गुज०) - दिनांक १-१२-८० को श्री कोदरलालजी की अध्यक्षता में शोक-सभा हुई जिसमें अनेक लोगों ने अपनी भावनाऐं व्यक्त करते हुए पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की। अंत में शोक-प्रस्ताव पारित करते हुए सभा समाप्त की गई।

बाकल (म०प्र०) - स्थानीय दि० जैन वीर सेवा मंडल की ओर से शोक-सभा आयोजित की गई जिसमें शोक-प्रस्ताव पारित किया गया। पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए णमोकार मंत्र का पाठ किया गया तथा २ मिनिट के मौन के पश्चात् सभा विसर्जित हुई।

अशोकनगर (म०प्र०) - अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन की स्थानीय शाखा ने

मोक्षमार्ग के प्रतिपादक, आत्मार्थी सत्पुरुष पूज्य कानजीस्वामी के आकस्मिक निधन पर गहरा शोक व्यक्त करते हुए शोक-प्रस्ताव पारित किया। — अध्यक्ष

बीना-बजरिया (म०प्र०) - पूज्य स्वामीजी के निधन पर शोक-सभा हुई जिसमें गुरुदेवश्री के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की गई। णमोकार मंत्र का पाठ भी किया गया। — बाबूलाल जैन 'मधुर'

नकुड़ (उ०प्र०) - स्थानीय जैन मिलन के सदस्यों की एक बैठक हुई जिसमें पूज्य कानजीस्वामी के स्वर्गवास पर शोक व्यक्त किया गया। — सुनील जैन

कांकरिया तलाई (म०प्र०) - पूज्य कानजीस्वामी के देहावसान का समाचार सुनकर समस्त दि० जैन समाज हतप्रभ रह गया। सभी व्यापारिक प्रतिष्ठान बंद रहे तथा श्री भूरालालजी अजमेरा की अध्यक्षता में श्रद्धांजलि-सभा की गई। समस्त जैन समाज ने सामूहिक रूप से ५ मिनिट का मौन रखकर णमोकार मंत्र का स्मरण करते हुए स्वामीजी के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की।

— राजेन्द्र जैन

शिरड़शहापुर (महा०) - जैन समाज की ओर से शोक-सभा आयोजित की गई जिसमें स्वामीजी के प्रति भावपूर्ण श्रद्धांजलि समर्पित की गई। स्थानीय पाठशालाओं के अध्यापक तथा विद्यार्थियों ने भी भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित की।

मुरार (म०प्र०) - पूज्य स्वामीजी के निधन के समाचार सुनकर स्थानीय जैन समाज ने अपना कारोबार बंद कर दिया। श्री रतनलालजी जैन की अध्यक्षता में शोक-सभा आयोजित की गई। जिसमें अनेक वक्ताओं ने उनके जीवन पर प्रकाश डालते हुए अपनी श्रद्धांजलियाँ समर्पित कीं।

— विनोदचंद सर्राफ

गाजियाबाद (उ०प्र०) - ३० नवम्बर ८० को दिगम्बर जैन महासमिति की स्थानीय इकाई की बैठक हुई जिसमें विश्व के महान आध्यात्मिक संत पूज्य कानजीस्वामी के आकस्मिक निधन पर गहरा शोक प्रगट किया तथा २ मिनिट का मौन रखकर श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

— वीरेन्द्रकुमार जैन

उभेगाँव (म०प्र०) - परमपूज्य महान आध्यात्मिक संत श्री कानजीस्वामी के स्वर्गवास के समाचार सुनकर संपूर्ण जैन समाज में शोक छा गया। सभी व्यापारिक प्रतिष्ठान बंद रहे तथा शोक-सभा आयोजित की गई जिसमें पूज्य स्वामीजी के प्रति श्रद्धासुमन अर्पित किये गये। — यशवंत जैन

सीकर (राज०) - पूज्य स्वामीजी के देहावसान पर शोक-सभा का आयोजन किया गया। जिसमें पंडित फूलचंदजी, श्री महालजी, श्री भगवानदासजी दीवान, श्री पी० सी० जैन, श्री

मंगलचंदजी जैन, श्री प्रभुदयालजी तथा श्री प्रकाशचंदजी दीवान ने पूज्य स्वामीजी के देहावसान को आत्मज्ञानी बंधुओं तथा समाज के लिये अपूरणीय क्षति बताते हुए श्रद्धांजलियाँ समर्पित कीं।

वाशिम (महा०) - श्री कन्हैयालालजी बाकलीवाल की अध्यक्षता में आयोजित शोक-सभा में एक प्रस्ताव पारित किया गया, जिसमें स्वामीजी के वियोग को अपूरणीय क्षति बताया गया।

छिंदवाड़ा (म०प्र०) - श्री केवलचंदजी सर्राफा की अध्यक्षता में स्थानीय तारण भवन में शोक-सभा आयोजित की गई। जिसमें श्री मुरलीधरजी नायक, श्री जयचंदजी जैन, श्री शांतिकुमारजी पाटनी, श्री प्रकाशचंदजी पाण्ड्या, श्री राजेन्द्रकुमारजी, श्री गोरेबाबू, श्री गुलाबचंदजी वात्सल्य एवं श्री चितरंजनजी ने अपने भाव व्यक्त करते हुए श्रद्धांजलियाँ अर्पित कीं। अंत में २ मिनिट का मौन धारण कर णमोकार मंत्र के पाठ के साथ सभा समाप्त हुई।

खडैरी (म०प्र०) - पूज्य कानजीस्वामी के देहावसान के कारण आयोजित शोक-सभा में विभिन्न वक्ताओं ने उनके जीवन-दर्शन पर प्रकाश डाला। अंत में नौ बार णमोकारमंत्र का उच्चारण करते हुए सभी ने अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की। **— नरोत्तमदास जैन**

मलकापुर (महा०) - पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी ने वीतराग धर्म की ध्वजा फहराकर अनुपम धर्मप्रभावना का तीर्थंकर समान कार्य किया है। उनके देह छूटने से दिगम्बर जैन समाज पर वज्राघात हुआ है। स्थानीय जैन समाज हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करती है। **— हौसीलाल सर्राफ**

तलोद (गुज०) - श्री अम्बूभाई पटेल की अध्यक्षता में शोक-सभा आयोजित की गई, जिसमें विभिन्न व्यक्तियों ने उनके जीवन पर प्रकाश डालते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की। **— कांतिलाल**

बण्डा-बेलई (म०प्र०) - पूज्य स्वामीजी के निधन के समाचार मिलते ही शोकविह्वल सारी जैन समाज ने समस्त कारोबार बंद रखा। रात्रि को शोक-सभा हुई, जिसमें पंडित बाबूलाल 'अनुज', पंडित प्रेमचंदजी, श्री जयचंदजी, श्री प्रकाशचंदजी बरा एवं श्री कपूरचंदजी भायजी ने अपने हृदयोगार व्यक्त करते हुए श्रद्धासुमन अर्पित किये।

आगरा (उ०प्र०) - पंडित ख्यालीरामजी की अध्यक्षता में दिनांक १४-१२-८० को उत्तरप्रदेशीय दि० जैन मुमुक्षु मंडल की ओर से शोक-सभा का आयोजन किया गया। सभा ने अपने प्रस्ताव में पूज्य कानजीस्वामी के स्वर्गवास से राष्ट्रव्यापी महान क्षति का अनुभव किया तथा शोक प्रस्ताव पारित किया गया। **— विनोद जैन**

सिलवानी (म०प्र०) - पूज्य कानजीस्वामी के देह विलय के समाचार सुनकर जैन समाज में शोक की लहर फैल गयी। शोक-सभा में अनेक वक्ताओं ने उनके जीवन पर प्रकाश डालते हुए

विनीत भावपूर्वक श्रद्धांजलि अर्पित की। — कपूरचंद जैन

कोटा (राज) - अ० भा० दि० जैन बघेरवाल युवा संघ की केन्द्रीय कार्यकारिणी समिति के कोटा के सदस्यों की ७ दिसम्बर ८० को बैठक हुई, जिसमें आध्यात्मिक सत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के आकस्मिक निधन पर गहरा दु:ख प्रकट किया गया। — जैनेन्द्रकुमार हरसोरा

केसली (म०प्र०) - आध्यात्मिक संत पूज्य कानजीस्वामी के आकस्मिक स्वर्गवास से दु:खी होकर स्थानीय दि० जैन मुमुक्षु मंडल ने अश्रुपूरित नेत्रों से श्रद्धांजलि अर्पित की।— गोकुलचंद

भोगांव (उ०प्र०) - जैन कल्याण संगठन के तत्त्वावधान में शोक-सभा आयोजित की गई, जिसमें पंडित रमेशचंदजी, पंडित सागरचंदजी आदि ने स्वामीजी के कार्यों व उपकारों का स्मरण करते हुए उनके कार्य को आगे बढ़ाने का संकल्प लिया तथा सभी ने श्रद्धांजलि अर्पित की।

— विजयचंद जैन

सहारनपुर (उ०प्र०) - टेलीविजन द्वारा पूज्य कानजीस्वामी के चिर वियोग के समाचार ज्ञात हुए। दिनांक ३०-११-८० को दि० जैन पंचायती मंदिर में वैराग्य भावना से ओत-प्रोत बारह भावनाओं का सामूहिक पाठ किया गया। पश्चात् श्री जे० डी० जैन प्राध्यापक की अध्यक्षता में शोक-सभा की गई। पूज्य स्वामीजी के उपकारों को स्मरण करते हुए श्री पंडित देवचंदजी साहित्याचार्य एवं श्री जिनेश्वरदासजी बजाज ने उनके जीवन पर प्रकाश डाला। अंत में सभी मुमुक्षुओं ने श्रद्धांजलि अर्पित की।

झूमरीतलैया (बिहार) - स्थानीय समस्त जैन समाज की यह श्रद्धांजलि-सभा अध्यात्मजगत के प्रखर सूर्य, प्रसिद्ध तत्त्वेत्ता श्री कानजीस्वाी के स्वर्गारोहण पर अपनी हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करती हुई दिवंगत आत्मा के निर्वाणलाभ की प्रार्थना करती है।

— कैलाशचंद गंगवाल

तिलकनगर-इंदौर (म०प्र०) - स्थानीय तिलकनगर जैन समाज की ओर से श्री कोमलचंदजी एडवोकेट की अध्यक्षता में शोक-सभा हुई जिसमें हीराचंदजी अजमेरा, रतनलालजी सोनी, शांतिलालजी खुराना आदि ने अश्रूपूरित नेत्रों से श्रद्धांजलि अर्पित की। शोक-प्रस्ताव पारित कर सभा विसर्जित की गई। — सागरमल मौला

डिप्टीगंज-दिल्ली - पूज्य गुरुदेवश्री के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करने हेतु स्थानीय मुमुक्षु मंडल की ओर से शोक-सभा आयोजित की गई। अंत में २ मिनिट का मौन रखकर शोक प्रस्ताव पारित किया गया। — श्री राम जैन

बैडिया (म०प्र०) - आध्यात्मिक संत श्री कानजीस्वामी के निधन पर स्थानीय जैन

समाज, युवा फैडरेशन, युवा परिषद तथा नवयुवक मंडल की ओर से संयुक्त शोक-सभा आयोजित कर श्रद्धांजलि अर्पित की गई। — **महेन्द्रकुमार जैन**

शिकोहाबाद (उ०प्र) - पूज्य कानजीस्वामी के निधन के समाचार मिलते ही समस्त कारोबार बंद रखा गया। सायंकाल शोक-सभा का आयोजन किया गया जिसमें समाज ने आपसी भेदभाव भुलाकर स्वामीजी के गुणों पर प्रकाश डालते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की।— **महावीरप्रसाद जैन**

मद्रास - दिनांक ३०-११-८० को शोक-सभा का आयोजन किया गया। जिसमें दि० जैन मुमुक्षु मंडल, गुजराती श्वेताम्बर मूर्ति पूजक संघ, गुजराती श्वेताम्बर स्थानकवासी एसोशियेशन, सौराष्ट्र जैन संघ, श्रीमद् राजचंद्र सत्संग मंगल, पालनपर जैन समाज, जैन यूथ फोरम एवं कच्छी जैन समाज की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

शामली (उ०प्र०) - युवा फैडरेशन के तत्त्वावधान में शोक-सभा आयोजित की गई, जिसमें अनेक सदस्यों ने अपने विचार व्यक्त करते हुए स्वामीजी के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की।

सनावद(म०प्र०) - पूज्य कानजीस्वामी के स्वर्गवास के समाचार सुनकर सभी मुमुक्षुजन स्तब्ध रह गये। सभी ने अपना व्यवसाय बंद रखा, तथा शोक-सभा आयोजित की। रात्रि को युवा फैडरेशन ने आत्मशुद्धि हेतु कीर्तन एवं बारह भावना का पाठ किया। — **सुरेश जैन**

गया (बिहार) - स्थानीय जैन भवन में श्री गजानंदजी पाटनी की अध्यक्षता में शोक-सभा हुई जिसमें स्वामीजी के जीवन पर विस्तृत प्रकाश डाला गया। अंत में णमोकार मंत्र के साथ शोक-प्रस्ताव पारित कर सभा विसर्जित की गई।

अलीगढ़ (उ०प्र०) - स्वामीजी के निधन के समाचार सुनकर स्थानीय दिगम्बर जैन समाज, दिगम्बर जैन महासमिति, अखिल विश्व जैन मिशन एवं अ० भा० जैन युवा फैडरेशन के कार्यकर्ताओं की ओर से शोक-सभा आयोजित की गई। सभा की अध्यक्षता पंडित घासीलालजी ने की। स्थानीय विद्वान सर्वश्री उत्तमचंदजी पाटनी, राजमलजी गोधा तथा राजूलालजी अध्यापक आदि ने स्वामीजी के जीवन पर प्रकाश डालते हुए श्रद्धांजलियाँ अर्पित कीं।

सेमारी (राज०) - पूज्य कानजीस्वामी के निधन पर शोकसंतप्त जैन समाज ने शोक-सभा की, जिसमें सभी ने अपनी श्रद्धांजलियां अर्पित कीं।

बूंदी (राज०) - श्री नाथूलालजी एडवोकेट की अध्यक्षता में शोक-सभा की गई, जिसमें सर्वश्री रतनलालजी, धर्मचंदजी, नेमीचंदजी, कपूरचंदजी सेठिया, केसरीलालजी गंगवाल आदि ने अपने विचार प्रगट करते हुए पूज्य स्वामीजी के प्रति श्रद्धांजलियाँ अर्पित कीं।

भोपाल (म०प्र०) - श्री नन्नूमलजी की अध्यक्षता में स्थानीय दिगम्बर जैन धर्मशाला में एक शोक-सभा का आयोजन किया गया जिसमें ब्रह्मचारी हेमराजजी, पंडित राजमलजी, ब्रह्मचारी हेमचंदजी तथा श्री राजमलजी पवैया आदि अनेक वक्ताओं ने पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी द्वारा प्ररूपित मौलिक सिद्धांतों की विशेषता बताते हुए अपने श्रद्धा-सुमन अर्पित किये। शोक में एक दिन कारोबार बंद रखा था।

फिरोजाबाद (उ०प्र०) - स्थानीय जैन युवा फैडरेशन के तत्त्वावधान में श्रद्धांजलि-सभा का आयोजन किया गया। प्रसिद्ध उद्योगपति लाला मुंशीलालजी, श्री प्रेमचंदजी रपरिया, श्री पन्नालालजी सर्राफ, वैद्य जयचंदजी, श्री चंद्रभानजी तथा श्री सूरजभानजी आदि ने पूज्य स्वामीजी द्वारा प्रतिपादित आत्मानुभूति-रस की वर्षा को उनकी अपूर्व देन बताया। सभी ने श्रद्धापूर्वक पूज्य स्वामीजी के प्रति अपनी श्रद्धांजलियाँ अर्पित कीं। **— वीरेन्द्र जैन**

बीड़ (म०प्र०) - दिनांक २-१२-८० को युवा फैडरेशन की स्थानीय शाखा के तत्त्वावधान में आयोजित शोक-सभा में स्थानीय जैन भाई-बहिनों के अतिरिक्त जैनेतर समाज के भी अनेक बंधु पधारे। उच्चतर माध्यामिक शाखा के आचार्य श्री चांदूलालजी ने पूज्य कानजीस्वामी के जीवन एवं उपलब्धियों पर विस्तार से प्रकाश डाला। अंत में शोक-प्रस्ताव पारित किया गया तथा २ मिनिट का मौन रखकर श्रद्धांजलियाँ अर्पित की गईं। **— प्रकाशचंद जैन**

कहान कथा : महान कथा

आलेख : अखिल बंसल, एम० ए०
चित्रकथा : अनन्त कुशवाहा

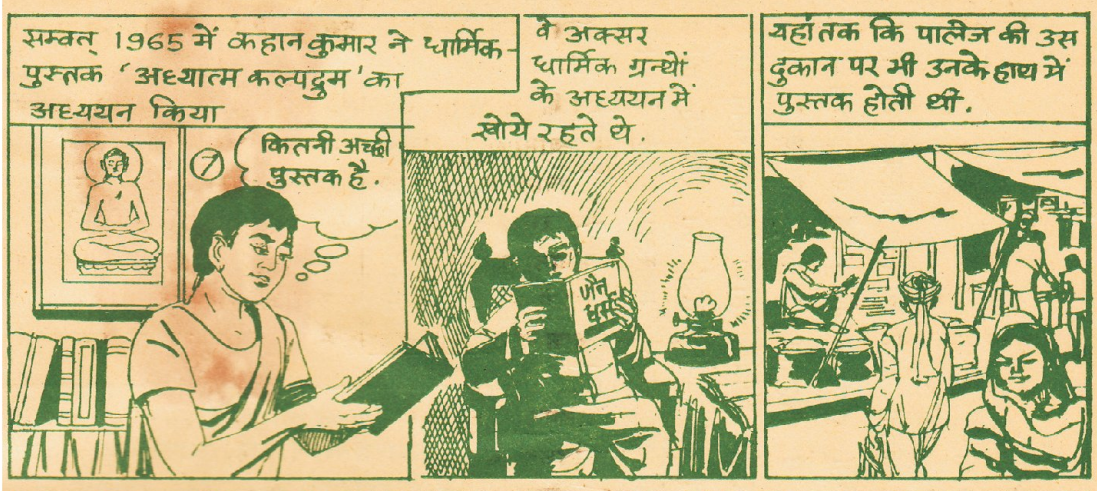

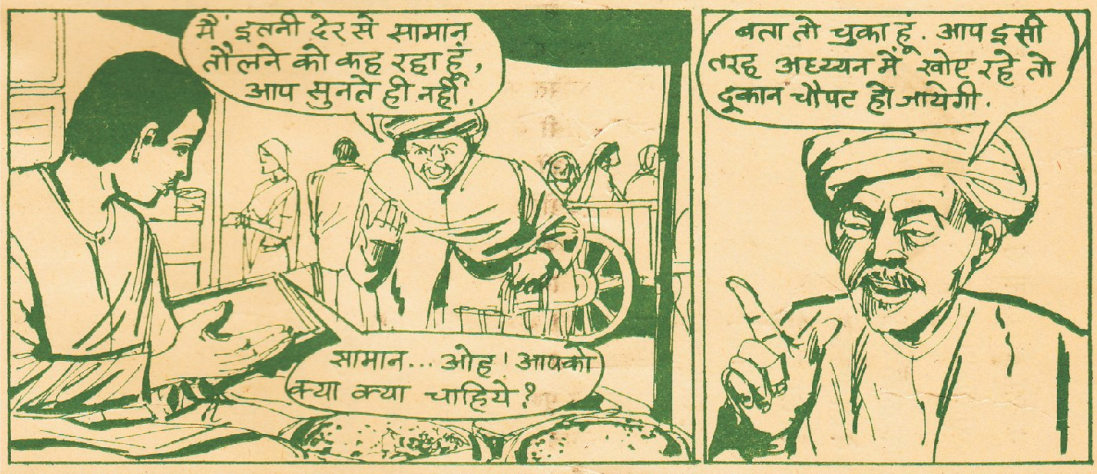

Registration. No. RJ-2712

एक महास्तंभ ढ़ह गया

धरती के कानों से आकर, क्षितिज कह गया
मुक्तिमार्ग का एक महास्तंभ ढ़ह गया

जिसके आते बंधु दिगम्बर मत में एक क्रांति आई
जिसकी वाणी में डग-डग पर, कुन्दकुन्द ने ली अंगड़ाई
किंतु नहीं जो तह तक पहुँचे, वे धूमिल छवि लगे बनाने
फिर कितने गिर गिरे नहीं कह सकता भाई?
निर्विरोध हो जो विरोध का वार सह गया
मुक्तिमार्ग का एक महास्तंभ ढ़ह गया।

कैसे भूलेंगे हम उनको, जो इतना सम्मान दे गया
स्वाध्याय की परंपरा को, जो नवजीवन दे गया
यह उनकी ही देन आज जो समयसार घर-घर में फैला
हम अपने को लगे जानने, ऐसा आतम ज्ञान दे गया
अपनी ओजस्वी शैली में जो अनुपम उद्देश कह गया।
मुक्तिमार्ग का एक महास्तंभ ढ़ह गया।

जो भी जितना किया आपने, शास्त्र कथन है
तर सकता तदरूप यदि कोई करे यतन है
सचमुच में सद्ज्ञान आपका बढ़ा-चढ़ा था
समयसार के गणधर तुमको कोटि नमन है
एक बात का स्वप्न 'सरस' जो शेष रह गया
मुक्तिमार्ग का एक महास्तंभ ढ़ह गया।

— शरमनलाल 'सरस', सकरार (झांसी-उ०प्र०)

Licence No.
P. P. 16-S.S.P. Jaipur City Dn.
Licensed to Post
Without Pre-Payment

If undelivered please return to :
प्रबन्ध-संपादक, आत्मधर्म
ए-४, टोडरमल स्मारक भवन, बापूनगर
जयपुर ३०२००४